वर्ष-3, अंक-9, सितंबर 2019
जे-7, श्रीरामरनगर, रायपुर छ.ग.
आर.एन.आई पंजीयन क्रमांक
CHHHIM/2017/72506

किलोल

शिक्षक दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन

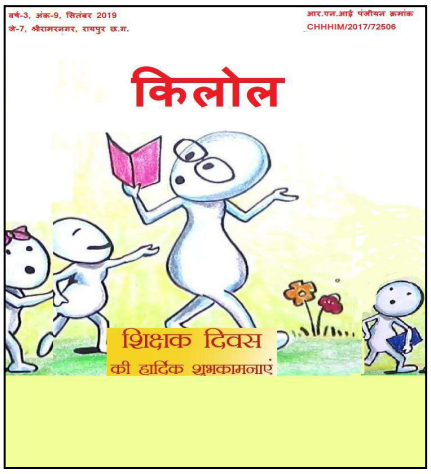

प्यारे बच्चों,

यह महीना त्योहारों का महीना है. विद्यार्थियों के लिये सबसे बड़ा त्योहार शिक्षक दिवस है. इस दिन हम अपने शिक्षकों का आदर, सत्कार और सम्मान करते हैं. आप सभी को शिक्षक दिवस की ढ़ेर सारी शुभकामनाएं.

इस महीने किलोल में आपको बहुत से शिक्षा के नवाचार देखने को मिलेंगे. एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर के सुधीर श्रीवास्तव जी कहानी इस दिशा में विशेष रूप से उल्लेखनीय है. मुझे उम्मीद है कि इन आलेखों से हम सभी को सीखने को मिलेगा.

इस अंक में अधूरी कहानी और चित्र देखकर कहानी लिखने में भी सभी ने काफी रुचि ली है. मैं सबको धन्यवाद देता हूं. किलोल की लोकप्रियता भी धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है. एक माह में पिछले अंक के 500 से अधिक डाउनलोड इस बात के गवाह हैं. किलोल के लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. सभी बच्चों को ढ़ेर सा प्यार.

आलोक शुक्ला

अनुक्रमणिका

हमर मोगली चेंदरू 6

नंदा मैडम की कक्षा 9

छत्तीसगढ़ म आजादी आंदोलन 20

मम्मी-पापा आप ही मेरे ऐश्वर्या राय और आप मेरे जेम्स बॉन्ड 22

नागपंचमी के तिहार 24

संस्मरण - भोजली पर्व 26

बच्चे हैं तो सब हैं, बच्चे नही तो कुछ भी नहीं 27

मोर पहली शिक्छक 28

शिक्षक दिवस 31

कहानी पूरी करो 33

- कन्हैया साहू 'कान्हा' व्दारा पूरी की गई कहानी 34
- इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी 35
- चन्द्र प्रकाश चतुर्वेदी व्दारा पूरी की गई कहानी 36
- दिलकेश मधुकर व्दारा पूरी की गई कहानी 36
- पद्यमिनी साहू व्दारा पूरी की गई कहानी 36
- राक्षस और राजकुमारी 37

चित्र देखकर कहानी लिखो 39

- दिव्यांगता अभिशाप नहीं वरदान 39
- तीन सहेलियां 41
- व्हीलचेयर 42
- आभा 43
- हमारा संकल्प - पर्यावरण की रक्षा 44

O My Dear ! 46

कान्हा छलिया 47

किशन कन्हैया 49

कृष्ण जन्म 51
आज तिरंगा लहराबे 55
गीत प्यार के 57
गुरूजी 58
चिड़िया 60
चिड़िया की पुकार (ताटंक छंद) 62
चिरई जाम 63
जय कन्हैयालाल की 64
देश के माटी 67
दोस्त 71
प्रकृति को बचायेंगे 74
बखरी के जिनगानी 75
बारिश ही बारिश 76
मड़ई मेला 79
मय रुख आंव 81
मेरा प्यारा छत्तीसगढ़ 83
मैया कैसे आऊं तेरे घर 85
मोर 87
विराम चिन्ह 88
शरीर के अंग एवं उनके कार्य 90
साथ बहन का भाई 92
स्कूल मुझे पास बुलाता है 94
हमन परबुधिया नोएन गा 96
हलषष्ठी 99
व्याकरण पहेलियां 101
विज्ञान के खेल - वर्षा मापक यंत्र 102

विज्ञान के खेल – स्थिर विद्युत 104
नवाचार - पॉक्सो बॉक्स 105
नवाचार – कहानी का नाट्य रूपांतरण 107
नवाचार – ग्रीन डे 108
नवाचार - चित्रकारी की क्षमता का विकास 109
नवाचार - मासिक वाल मैगजीन बाल दर्पण का प्रकाशन 110
बाढ़ से बचाव की पेंटिंग 112
आओ हंस लें 113
भाखा जनउला 114

<u>हमर मोगली चेंदरू</u>

लेखक - योगेश ध्रुव "भीम"

छत्तीसगढ़ के मयारू बेटा चेंदरू तोर नाव न
बघवा संग खेले कूदे असल मोंगली कहाय न

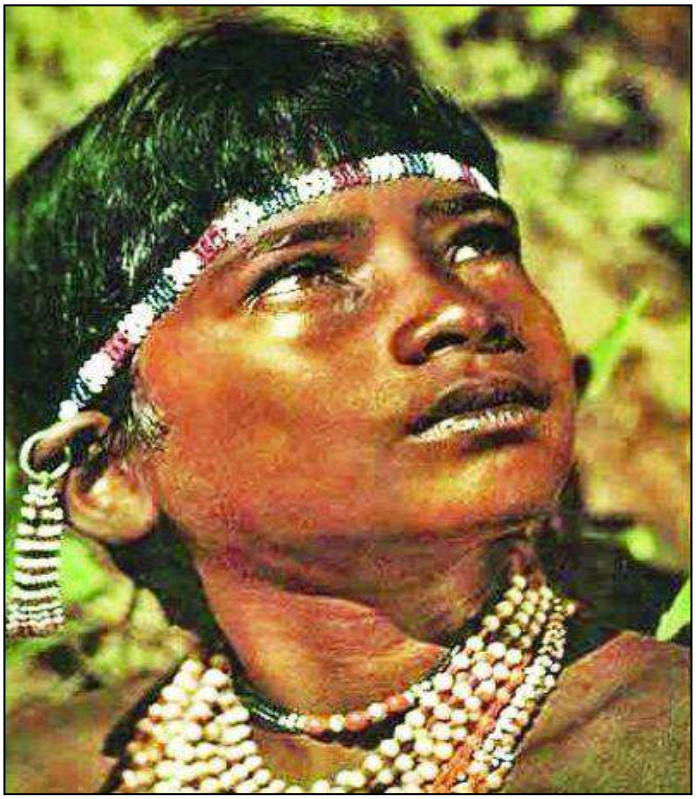

छत्तीसगढ़ बस्तर के घनघोर जंगल म.मारिया जनजाति के चेंदरू मण्डावी ह पूरा दुनिया म "टाइगर ब्याय" अउ "असली मोगली" के नाव ले परसिध्द हावे.

चेंदरू के जीवन ह बड़ बिचित्र रिहिस. ओखर संगी बाघ मन ले रिहिन. अउ वहू ह कोन्हों चिड़ियाघर के नही.असल जंगल के संगवारी रहाय. हर बेरा म ओखरो से खेलई,कूदई,खवइ अउ तो अउ ओखर संग म सोय घलो. एखरो बारे म स्वीडन के परसिध्द डायरेक्टर अरेन सेक्सडोर्क ल ये किस्सा के बारे मे पता चलिस त ओहा तुरते चेंदरू से मिले ल आगे अउ ओखर संग एक महीना ले रिहिस अउ ओकर बारे

मे जानिस घलो. देश बिदेश म बस्तर ल पहचान देवइया हमर मयारू चेंदरू मण्डावी ले 1957 म "द जंगल सागा" (अंग्रेजी म "द फ्लूट एंड द एरो") नाव ले स्वीडिश फिलिम ल "अरेन सक्सडोर्क" घलो बनाय रिहिस. ओखर संगवारी बघवा मन ले रहाय ओखरे बारे म ओ फिलिम म देखाय घलो गे हावे. चेंदरू के ऊपर ले "ब्याय एंड द टाइगर" नाव ले एक ठन किताब ल घलो लिखे गे हावे. "अरेन सक्सडोर्क" अपन संग म स्वीडन ले गे रिहिस अउ एक महीना ले अपन संग म अपन बेटा कस रखे रिहिस. ओखर देखभाल अरेन के गोसईन अस्त्रिड ह करय जोन ह अच्छा फ़ोटो ग्राफर रिहिन. जेन बेरा म फिलिम ल देखाय गिस त चेंदरू मंडावी ल स्वीडन समेत पूरा बिदेश ल घुमाय गे रिहिस.

1958 बछर म कान फिलिम उत्सव म ये फिलिम ल देखाय गिस. गड़बेंगाल गांव ले कभू बाहिर नई गे रिहिस चेंदरू मण्डावी ह. अउ ओह फिलिम के सेती कई महीना ले चेंदरू ह बिदेश म रेहेल घलो मिलिस. चेंदरू के दुनिया ह बदल गे रिहिस हावे.बिदेश म लोगन मन ओखर से मिले बर अउ ओला देखेल आय. लोगन देख के बड़ अचरच म पड़ जाय की ये छोटेकुन लइका ह बघवा संग म रथे खवई पियई ओखर पीठ म बइठ के जंगल म घुमईं बात ल करथे. चेंदरू मण्डावी पूरा रातो रात पूरा दुनिया भर म परसिद्ध होगे. अउ "अरेन ह चेंदरू ल अपन बेटा घलो बनाय बर राजी रहींन त उही बेरा म ओखर गोसईन अस्त्रिड संग म ओखर तलाक घलो होंगे.त ओहर चेंदरू ल छोड़े बर अपन देश भारत लइस त बम्बाई म भारत के प्रधानमंत्री "जवाहर लाल नेहरू" ले चेंदरू के मेलमेलाप कराय घलो गे रिहिस हावे.ओला पढ़ाई लिखई अउ नौकरी देवाय के बात घलो केहेरिस. लेकिन चेंदरू के ददा ह अपन बेटा ल अपनेच जगह म बुलइस घलो. जब लईकुशहा उमर के चेंदरू वापिस अपन गाँव म अइस त ओहा अपन माटी के सचई ल घलो जाने रहाय. बीतत बेरा के संग म चेंदरू ह नरायनपुर अउ बस्तर के जंगल म घलो गवांवत रिहिस हावे. गढ़बेंगाल गाँव के लोगन मन बताते चेंदरू ह जब बिदेश ले लौटिस त ओहा कई साल ले अनचेतहा रहाय.गाँव के लोगन मन ले दुरिहिया दुरिहिया अउ

बदहवास रहाय. कभू-कभू ओखर ऊपर जइसे कोन्हों दौरा पड़े कस रहाय त ओहा अपन अतीत म घलो गवा जाय.

पत्रकार मन ह बस्तर जाए त ओ मन ह गढ़बेंगाल गांव जाए अउ चेंदरू मंडावी ले मीले घलो. अउ दो तीन घांव अईसे होए रीहिस की चेंदरू हर पत्रकार मन ल देख के जंगल डहर भाग जाए.तओखर घर वाला मन बताय घलो की ओहर पैंट-शर्ट पहन के अवैय्या मनखे मन ल देख के भाग जथे. अउ यहु सच आए ओहर ह उपेक्षा के शिकार हो गे रिहिस. तेखरे सेती ओहर अंदर अंदर म टूटगे रिहिस. अइसे लागे जइसे ओखर आघू म ओकर अतीत ह आवत हावे. वहू ह एखर ले मुक्ति पईस. हमर राज के नाम ल बिदेस म पहुचइयाँ बेटा चेंदरू ल लोगन भुलागे अउ गुमनामी जिंदगी ल जियत धीरे-धीरे 70 बरस उमर म 18 सितम्बर 2013 म गढ़बेंगाल के चेंदरू मंडावी ह भगवान घर चलदिस. जेहर बघवा मन ले दोस्ती अउ दिलेर चेंदरू मंडावी ह बिदेश म बड़ नाव घलो कमईस. जेखर नाव ल अमर करे खातिर छत्तीसगढ़ सरकार ह जंगल सफारी म चेंदरू मण्डावी के नाव ले गुड़ी बना के असल म मयारू बेटा चेंदरू ल श्रध्दांजंलि दे हावे.

तोर नाव अमर रहाय मोर मयारू बेटा
चेंदरू मण्डावी तय छतीसगढ़ महतारी के

<u>नंदा मैडम की कक्षा</u>

लेखक - सुधीर श्रीवास्तव

आज स्कूल जाते समय नंदा बहुत खुश थी. बात दरअसल यह थी कि वह पिछले कई दिनों से यह तय नहीं कर पा रही थी कि कक्षा 3 के बच्चों के साथ संख्याओं की अवधारणा पर काम कैसे किया जाए. यहां तक आते-आते बच्चों ने 100 तक की गिनती लिखना पढ़ना और चीजें गिनना तो सीख लिया है, आसानी से जोड़ने घटाने के सवाल भी कर लेते हैं. हासिल और उधार के प्रश्न ही अभ्यास के कारण कर लेते हैं. एक तरह से उन्होंने इन तरीकों को याद कर लिया है. लेकिन वह जानती थी कि बच्चों को यह पता नहीं है कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं.

वह चाहती थी कि बच्चे लिखी हुई संख्याओं को न केवल नाम से पहचाने बल्कि उनके अर्थ भी समझें. देखें कि जिन अंकों की मदद से संख्या लिखी गई है उनको यहां एक खास मतलब से लिखा गया है. एक ही अंक अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग अर्थ रखते हैं ..... ऐसी और भी बातें हैं ..... लेकिन यह किया कैसे जाए? इसी उधेड़बुन में कई दिन लग गए थे. आज सुबह उसे एकाएक उपाय

सूझा. क्यों न बच्चों को उन परिस्थितियों में ले जाया जाए जिन परिस्थितियों में संभवतः पुराने लोगों ने संख्या पद्धति पर सोचा होगा. हो सकता है वह अपनी कोशिश में सफल ना हो लेकिन यह तो तय है कि बच्चों को कुछ सोचने का मौका मिल सकेगा. उसने अपने दिमाग में दो-तीन दिनों के काम का एक मोटा खाका तैयार कर लिया था. उसकी कल्पना में कई बातें आ जा रही थी. बच्चे यह सवाल करेंगे..... मेरे जवाब यह होंगे..... मेरे प्रश्न क्या होंगे? बात कैसे शुरू होगी? कक्षा की परिस्थितियों की कल्पना कर उसे बार-बार रोमांच हो रहा था.

जैसे ही वह कक्षा में आई बच्चों ने चिल्लाकर कहा - गुड मॉ sssss र्निंग मैडम. गुड मॉर्निंग बच्चों नंदा उसी लहजे में जवाब दिया. बच्चों को शांत और स्थिर होने में एक आद मिनट लग गया. तब तक नंदा उन्हें मुस्कुराती हुए देखती रही. बच्चों को उसका यह तरीका मालूम था. जब कक्षा शांत हो गई तो उसने कहा - बच्चों आज मैं तुम्हें एक मजेदार कहानी सुनाने जा रही हूं. यह कहानी बहुत पुराने जमाने की है. इतने पुराने कि उस समय लोगों को थोड़ी बहुत ही गिनती आती थी पर मजे की बात यह थी कि उनका काम रुकता नहीं था. सुनोगे? हां हां... जरूर सुनेंगे. सभी बच्चों ने एक स्वर में कहा और खुशी के मारे तालियां बज गई.

नंदा ने कहना शुरू किया - एक छोटे से गांव में एक किसान रहता था. बहुत मेहनती था वह. उसने अपने घर के पीछे बाड़ी में कई तरह के फल और सब्जियां उगा रखी थी. कभी-कभी वहां से फल और सब्जियां तोड़ता, अपनी जरूरत के हिसाब से अपने पास रखता, बाकी मोहल्ले पड़ोस में बांट देता. गांव के दूसरे लोग भी ऐसे ही अपनी चीजें आपस में बांटा करते थे. एक बार उस किसान की बाड़ी में खूब अमरुद फले. बड़े-बड़े हरे-पीले मीठे अमरूद. वह टोकरी भर अमरुद लेकर घर आया. अचानक उसके मन में विचार आया कि इन्हें गिन कर देखा जाए कि यह हैं कितने? टोकरी से एक-एक अमरुद निकाल कर बाहर रखा गया और गिनता गया एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ, नौ और दस .... गिनती तो खत्म हो गई

अमरूद बचे रहे. अब क्या करें? उसे उतनी ही गिनती आती थी जितनी उसके हाथ में उंगलियां थी. वह सोचता रहा सोचता रहा ..... आखिर उसे एक तरकीब सूझ गई. उसने 10 तक की गिनती का ही उपयोग कर अपने सारे अमरुद गिन लिए.

इतना कहकर नंदा चुप हो गई. बच्चे तो मानो उसी दुनिया में घूम रहे थे. कुछ क्षणों बाद चुप्पी टूटी. एक बच्ची ने पूछा - उस किसान ने सारे अमरुद कैसे गिने होंगे मैडम? यही तो हमें जानना है. जैसा उस किसान ने किया कुछ ऐसी ही कोशिश हम भी करके देखेंगे.

ऐसा कहकर नंदा ने अपने बैग से एक रैली निकाली और उसमें रखे इमली के बीजों को टेबल पर उलट दिया. उसने बच्चों से कहा - मान लो यह अमरुद हैं, इन्हें हम गिनेंगे और हां, ध्यान रहे कि हमें केवल दस तक की गिनती आती है. हम गिनते समय ग्यारह, बारह, तेरह..... और इसके आगे की गिनती का उपयोग नहीं करेंगे.

एक बच्चा टेबल के पास आया. उसने एक-एक बीज निकालकर अलग रखते हुए गिनना शुरू किया, लेकिन दस तक गिनने के बाद रुक गया..... सोचने लगा अब क्या? कक्षा के बच्चे खुसुर-फुसुर कर रहे थे. नंदा ने उन्हें चुप कराने की कोशिश नहीं की. थोड़ी देर में एक बच्ची ने पूछा - मैडम हम दस से आगे नहीं गिन सकते क्या?

गिनना तो दस के आगे भी है किन्तु हम ग्यारह, बारह, तेरह ..... ऐसे नहीं गिन सकते. नंदा ने एक बार फिर अपनी शर्त समझाई. तो क्या हम बचे हुए को फिर से नहीं गिन सकते? बच्ची ने कुछ सोचते हुए दोबारा पूछा.

यही तो समस्या का हल था. नंदा को लगा कि वह खुशी से चिल्ला पड़ेगी. उसे उम्मीद नहीं थी कि बच्चे इतनी जल्दी इसे ढूंढ लेंगे. उसने अपनी खुशी छुपाते हुए कहा - सोचना पड़ेगा.

लेकिन यह विचार पूरी कक्षा को एक दिशा दे गया. उस बच्ची ने कहा - मैं गिन कर देखती हूं. उसने पहले से गिने दस बीजों के ढेर को किनारे खिसकाया और बचे हुए बीजों में से एक-एक बीच निकालते हुए गिनना शुरू किया. देखते-देखते दस बीजों की दूसरी ढेरी बन गई. नंदा ने उस बच्ची के लिए तालियां बजाईं फिर उसकी पीठ थपथपा कर कहा - बहुत अच्छा बहुत ही अच्छा.

पूरी कक्षा तालियों की आवाज से गूंज गई. बच्ची के चेहरे पर मुस्कुराहट आई. अब थोड़े से बीच बच गए थे. नंदा ने पूछा अब कौन गिनेगा? मैं मैं मैं.... के शोर से कक्षा भर गई. सारे बच्चों के हाथ उठे हुए थे. पीछे बैठे कुछ बच्चे घुटनों पर तो कुछ पीछे पूरी तरह खड़े हो गए. सबकी इच्छा थी कि उन्हें भी मौका मिले.

नंदा आनंदित हो उठी. बच्चों ने रास्ता ढूंढ़ लिया था. इतना आनंद उसे कभी न मिलता यदि वह खुद हल बता देती. उसकी नजर एकाएक उस बच्चे पर पड़ी जो इस पूरे माहौल से अप्रभावित चुप बैठा था. नंदा ने कक्षा को शांत करते हुए कहा - ठीक है, ठीक है. मुझे पता चल गया है तुम सभी गिन सकते हो. मैं दयानंद को मौका दूंगी. उस शांत बैठे बच्चे को अपने पास बुलाते हुए उसने कहा - आओ दयानंद मेरे पास आओ बेटे.

दयानंद सामने आया. उसने बिना कुछ पूछे बचे हुए बीजों को गिनना शुरू किया. एक, दो, तीन, चार, पांच, छः और सात ..... बस. नंदा को आश्चर्य हुआ और खुशी भी. उसे लग रहा था दयानंद किसी मुश्किल में है. शायद कक्षा में चल रही बातचीत उसे समझ में नहीं आ रही हो. शायद उसकी तबीयत ठीक ना हो. लेकिन उसने तो बिल्कुल सही ढंग से गिना. फिर भी दयानंद का ध्यान रखना होगा. मन ही मन निश्चय कर उसने कहा - वाह, वाह. बहुत अच्छे, बहुत अच्छे , बैठो. बच्चों का ध्यान तीनों ढ़ेरियों की ओर ले जाते हुए उसने कहा - अब हमें बताना है कुल कितने बीज हैं. सत्ताइस, सब बच्चे जोर से चिल्ला उठे.

नंदा मुस्कुराई. फिर धीरे से उसने कहा - हम तो यह मान कर चल रहे हें कि हमारी गिनती दस तक है, ग्यारह नही है, बारह नहीं है. तो 27 होगा क्या? बच्चों की आवाज आई - ओह! उन्हें यह समझ मैं आ रहा था कि बीज हैं तो सत्ताइस लेकिन उन्हें सत्ताइस नहीं कहना है. सब सोचने लगे अब क्या करें?

नंदा ने कहा - तुम लोग चाहो तो एक दूसरे से बातचीत कर सकते हो. दो-चार मिनट की बातचीत के बाद कुछ चेहरों पर मुस्कान दिखाई पड़ने लगी. नंदा को समझ में आ गया कि बच्चों ने कुछ पा लिया है.

उसने सोचा, बच्चों को पहल करने दूं. वह चुप रही. बच्चों का धैर्य व्यग्रता में बदल रहा था. अंततः उनसे रहा नहीं गया. वे बोल पड़े - मैडम अब बताएं क्या?

जरूर लेकिन एक एक करके. नंदा ने कहा. एक बच्ची खड़ी हुई. उसने अपने दोनों हाथों की उंगलियों को पूरा फैला कर कहा - इतने, इतने, फिर इतने. आखिरी बार उसने अपनी केवल सात उंगलियां दिखाईं.

नंदा अवाक होकर उसकी ओर देखती रह गई. उसने सोचा ना था कि ऐसा जवाब भी आ सकता है. बहुत आश्चर्य से बोल पड़ी - वाह क्या बात है. तुमने तो कमाल कर दिया. मारे खुशी के वह खुद को रोक नहीं पाई. आगे बढ़कर उसने बच्ची के दोनों गालों को हाथों में भर लिया और अपने से चिपका लिया. फिर उसकी पीठ ठोंक कर पूछा - यह तुमने कैसे सोचा?

बच्ची ने कहा - मैडम यह मैंने अकेले नहीं सोचा. उसने अपने साथियों की ओर इशारा करके कहा - हम सब लोग सोच रहे थे, संख्या को बोलना नहीं है तो कैसे बताएं? बात करते-करते यह आईडिया आ गया. नंदा उस समूह के पास पहुंची. सब बच्चों को शाबाशी दी. पूरी कक्षा से कहा - इनके लिए सभी लोग जोर से तालियां बजाओ. पूरी कक्षा जोश से भर गई थी. नन्हे हाथों की तालियां गडगड़ाने लगीं.

कक्षा शांत हुई तो नंदा ने पूछा - क्या इसके अलावा कोई और तरीका है? उसने देखा कि अभी भी बहुत से बच्चों ने हाथ उठा दिए. उसने बच्चों के एक ग्रुप से कहा - बेटे तुम लोग कुछ बताओगे? बच्चों ने कहा - मैडम दस, दस और सात.

अरे वाह क्या बात है. इनके लिए भी तालियां. नंदा ने जोर से कहां. पीछे से कुछ बच्चों ने कहा - मैडम हम भी बताएंगे. हां हां बताओ. दो बार दस और सात. बहुत बढ़िया बहुत बढ़िया तालियां बजनी चाहिए.

बहुत मजेदार दृश्य था. सारे बच्चे खुशी और उत्साह से भरे हुए थे. उनकी छोटी-छोटी कोशिशों को सराहना मिल रही थी. उनके चेहरे पर विश्वास दिख रहा था. उन्हें देखकर लग रहा था जैसे उन्होंने कोई बड़ा मैच जीत लिया है.

नंदा ने फिर पूछा, किसी और के पास कोई दूसरा उत्तर है? बच्चों ने कहा, नहीं मैडम, हम भी ऐसा ही सोच रहे थे. बहुत अच्छा तुम लोगों ने जिस तरह इस समस्या का हल ढूंढ़ा, कुछ वैसा ही उसके सामने भी किया होगा. तुम सभी ने मिलकर बहुत बढ़िया काम किया है बहुत ही बढ़िया.

लेकिन मेरे मन में एक सवाल है. यह कहकर नंदा चुप हो गई. सभी बच्चे उत्सुकता से उसकी ओर देखने लगे. उसके मन में यह विचार उसने लगा कि ऐसा सवाल होगा. जब मैं इस कहानी के बारे में सोच रही थी तो मेरे मन में एक प्रश्न उठा. प्रश्न यह था कि यदि उस किसान को दस तक की गिनती नहीं आती, मान लो वह केवल आठ तक की गिनती जानता तो क्या वह पूरे अमरुद गिन पाता?

सारे बच्चे एक बार फिर सोच में पड़ गए. नंदा ने कहा - इसके लिए तुम अभी परेशान ना हो. कल सोच कर आना फिर सब मिलकर इसका जवाब देंगे.

<u>दूसरा दिन</u> -

दूसरे दिन जब नंदा अपनी कक्षा में पहुंची तो बच्चों ने उसे घेर लिया और चिल्लाने लगे, हमने बना लिया, हमने बना लिया. अच्छा ठीक है, ठीक है.... बैठ

जाओ... अरे भाई पहले बैठ जाओ.... हाजिरी भरने दो फिर कल के सवाल पर बात करेंगे.

नहीं मैडम पहले सुनिए. हाजिरी बाद में.

अच्छा बाबा ठीक है. लेकिन पहले बैठो तो. सारे बच्चे बैठ गए तब नंदा ने पूछा कितने बच्चों से बना? सभी बच्चों ने हाथ उठा दिए. सामने बैठे बच्चों ने कहा मैडम आज हम लोग पहले बताएंगे कल हमारी बारी सब के बाद आई थी. अच्छा ठीक है चलो तुम ही लोग बताओ.

एक बच्चे ने कहा - मैडम वह किसान है न, सबसे पहले अमरूदों को एक तरफ रख देगा. ढेर में से आठ अमरूद निकालकर अलग ढ़ेरी बनाएगा. फिर आठ अमरूद निकालकर दूसरी ढेरी बनाएगा. ऐसे ही आठ-आठ अमरूदों की ढेरी बनाता जाएगा. एक बार ऐसा होगा कि आठ अमरुद नहीं बचेंगे. उनको अलग से गिन लेगा. फिर वह बता सकेगा कि आठ-आठ अमरूदों की इतनी ढ़ेरियां और इतने अमरूद और.....

नंदा चकित थी. संख्या पद्धति की इस संरचना को कोई बच्चा इतनी आसानी से समझा देगा. वह भी एक अलग परिस्थिति में. यह उसकी कल्पना में नहीं था. उसके मुंह से बस इतना ही निकला - तुम सब तो कमाल करते हो क्या बात है. अपने आप उसके हाथों से तालियां बज गईं. सारे बच्चे तालियां बजाने लगे. नंदा सोच रही थी हम बड़े लोग बच्चों को कितना छोटा करके आते हैं. हम पहले ही यह सोच लेते हैं कि बच्चे यह नहीं कर पाएंगे, बच्चे वह नहीं कर पाएंगे. यदि उन्हें सोचने और आपस में बातचीत करने के मौके दिए जाएं तो उनकी सहज बुद्धि कितने रास्ते ढूंढ लेती है, कितने तर्क बुन लेती है, कितने सवाल करती है, कितने जवाब बना लेती है. आखिर क्यों न हो. यह भी तो इंसान ही हैं ना.

नंदा को इस विचार प्रवाह में बहना अच्छा लग रहा था. उसे लगा कि शिक्षक के रूप में सवालों के जवाब खुद दे देकर हम समस्याओं से जूझने की बच्चों की

नैसर्गिक क्षमता को विकसित नहीं होने देते. ऐसा करके हमें लगता है कि हम उनकी मदद कर रहे हैं लेकिन हम उन्हें कुछ मायनों में कमजोर कर रहे होते हैं. उसे तितली की कहानी याद आ रही थी जो अपने कोकून से बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रही थी और एक बच्चे ने उसकी मदद करने के लिए कोकून में एक बड़ा सा छेद बना दिया था. तितली बाहर तो निकल आई पर उसके पंख पूरी तरह विकसित नहीं हो पाए थे. उसने उड़ने की कोशिश की पर वह उड़ न सकी और आखिर मर गई..... बेचारी.

मैडम जी.... बच्चे उसे झिंजोड़ रहे थे. अचानक उसकी तंद्रा टूटी. उसने अपने आप को संभाला और अपने विचार क्रम को तोड़ते हुए बच्चों से कहां- सॉरी बेटे तुम लोगों के उत्तर ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया..... अच्छा चलो बताओ किसी के पास इससे अलग उत्तर है?

ऐसे ही हम भी देंगे मैडम.

बहुत अच्छा.

नंदा के दिमाग में नया प्रश्न आ रहा था कि यदि ढ़ेरियों की संख्या आठ से ज्यादा हुई तो बच्चे कैसे गिनेंगे? फिर उसे लगा कि अभी इतनी ही बात की जाए. अभी जो कुछ हो पाया है उसी विचार को और पक्का होने दूं तो ज़्यादा अच्छा रहेगा. उसने बच्चों से कहा - सुनो.... सुनो, अभी इस बात को यहीं खत्म करते हैं. कल हम जिन बीजों को गिन रहे थे उन्हीं पर कुछ और बात करते हैं. क्या किसी को याद है कि हमने कल कितने बीज गिने थे?

दस, दस, और सात बीज.

दो बार दरस और सात बीज, बच्चों के उत्तर आए .

ठीक, अब जरा सोचो यदि हमारे पास गिनती में दस के बाद और नाम होते जैसे दो बार दस के लिए , तीन बार दस के लिए ..... और इसके आगे भी तो क्या होगा?

..... कोई उत्तर नहीं आया.

अच्छा चलो एक काम करते हैं. हम अपने मन से कुछ नाम बनाते हैं. नंदा ने अपने दोनों हाथों की उंगलियों को सामने दिखाते हुए कहा इतनी चीजों के लिए हमारे पास एक नाम है दस. अब अगर इतनी इतनी चीजें दो बार हो यानी दस और दस हो जाएं तो इनके लिए कोई नाम सोच लें - क्या नाम दें?

बच्चे थोड़ी देर इसे समझने की कोशिश करते रहे फिर एक बच्ची ने उठकर धीरे से कहा - मैडम जी, दस और दस के लिए नाम है न बीस.

अरे हां, मैं भी कैसी भुलक्कड़ हूं. बेटी तुमने अच्छा याद दिलाया. दस और दस को हम बीस कहते हैं. गुड. अब तो अपना काम आसान हो गया चलो अब बताओ तीन दस को क्या कहेंगे? तीस - कुछ बच्चों ने एक साथ कहां. और चार दस को? चालीस. सभी बच्चे जोर से चिल्लाए. अब उन्हें यह पैटर्न समझ में आने लगा था. नंदा और आगे पूछती इसके पहले कई बच्चे कहने लगे -

पांच दस को पचास.
छः उस को साठ.
सात दस को सत्तर.

बस बस. मैं जान गई कि तुम सबको यह नाम मालूम है. बहुत. आओ हम सब मिलकर एक काम करें. मैं बोर्ड पर इन्हें लिखती हूं. तुम सब लोग सोच कर उसके आगे की संख्या का नाम लिखना. इतना कहकर नंदा ने बोर्ड पर बाईं ओर इस तरह लिखा -

दो आर दस .....
एक बार दस .....
सात बार दस .....
चार बार दस .....
नौ बार दस .....
तीन बार दस .....
दस बार दस .....

उसने बच्चों को बारी-बारी से आने के लिए कहा. बच्चे क्रम से आते गए. उन्होंने संख्या के आगे उनका नाम लिखा. दो तीन बच्चे थोड़े झिझक रहे थे. वे ज्यादा कुछ सोच पाते उसके पहले दूसरे बच्चे संख्या बोल देते. नंदा को लगा अभी कुछ और अभ्यास कराने की जरूरत है. बोर्ड के पास बुलाने पर सभी बच्चों को चांस नहीं मिल पा रहा है. उसने सभी बच्चों से कहा - सब अपनी-अपनी कॉपियों में ऐसे ही उन संख्याओं को लिखो जिन्हें तुम जान गए हो.

बच्चे काम करने में मशगूल हो गए. कुछ बच्चे एक-दूसरे से पूछकर या तो जान रहे थे या अपनी समझ के प्रति आश्वस्त हो रहे थे. नंदा ने उन्हें आपस में बातचीत करने से नहीं रोका. उसे हमेशा यह लगता है कि बच्चे आपस में बातें करके भी बहुत कुछ सीख सकते हैं. पांच-सात मिनट बाद बच्चे अपनी कापियां लेकर उसके पास आने लगे. प्रायः सभी बच्चों ने बहुत हद तक सही किया था. शब्दों को लिखने में कहीं-कहीं मात्रा, वर्ण आदि की त्रुटियां थी. नंदा ने सोचा, इन शब्दों के हिज्जे बाद में सिखा दूंगी अभी तो इनको ढंग से काम करने दूं.

उसने देखा बच्चे बहुत मजे से काम कर रहे हैं. उसे लगा इस काम को थोड़े अलग ढंग से भी करके देखा जाना चाहिए. उसने बच्चों से पूछा - क्या हम लोग पूछने बताने का खेल खेलें? कक्षा में जो खेल नंदा करती थी उसमें यह भी एक खेल था. इस खेल में बच्चे ही सवाल करते और बच्चे ही जवाब देते थे. नंदा ने जैसे ही पूछा बच्चों के शोर से कक्षा गूंज गई.

खेलेंगे.... हां हां खेलेंगे... देखते ही देखते कक्षा दो हिस्सों में बट गई. टीम ए और टीम बी. नंदा ने पूछा - आज खेल का नियम क्या होगा? एक बच्ची ने कहा - जब एक टीम दूसरी टीम से सवाल करेगी तो सवाल पूछने वाला यह भी तय करेगा कि जवाब कौन देगा. नंदा ने पूछा - क्या यह बात सब को मंजूर है? सब ने कहा - हां. ठीक है

फिर बारी-बारी से हर टीम ने सवाल पूछना शुरू किया. सबसे पहले टीम ए की नेहा ने पूछा - तीन बार दस यानि कितना होगा, अंजलि बताएगी. तीस अंजलि ने कहा.

अब अंजलि ने पूछा - नौ बार दस कितना होगा, अनवर बताएगा. नब्बे. अनवर ने उत्तर दिया.....और खेल चलता रहा. खेल के खत्म होने तक नंदा आश्वस्त हो चुकी थी कि सभी बच्चे यह समझ गए हैं कि दस, बीस, तीस.... में कितने कितने दस शामिल हैं.

खाना खाने का समय हो गया था. उसने कहा - आज बस इतना ही. कल फिर नया के खेल खेलेंगे. और हां कल जब आओ तो कुछ चीजें ढूंढ कर लाना, जैसे छोटे-छोटे तिनके, बजरी, गिट्टी के टुकड़े, कंकर, चूड़ी के टुकड़े और ऐसी ही कुछ चीजें जो आसानी से मिल जाएं. ठीक है? अच्छा अब जाओ अब तुम्हारे खाने की छुट्टी. जल्दी आना. आज तुम्हें एक मजेदार कहानी सुनाउंगी.

बच्चे हो.... हो.... करते हुए कक्षा से बाहर निकल गए जल्दी आने के लिए. खाने की छुट्टी के बाद जब बच्चे आए तो नंदा ने उन्हें सिंदबाद की कहानी सुनाई. बच्चों ने बहुत मन से कहानी सुनी. थोड़ी देर बाद छुट्टी हो गई. नंदा आकर स्टाफ रूम में बैठी. उसका दिमाग कल की कक्षा की योजना बनाने में लगा हुआ था. थोड़ी देर बाद उसने कुछ बातें तय की और उन्हें अपनी डायरी में लिख लिया.

<u>छत्तीसगढ़ म आजादी आंदोलन</u>

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

गुलामी के दिन ल दूर करके सुराज लाये बर जुलुम के विरोध अउ अंग्रेज मन ले संघर्ष पूरा देश म होइस. 1857 म मेरठ के धरती ले एकर शुरुआत माने जाथे।फेर छत्तीसगढ़ के परलकोट म 1824 ले एकर शुरुआत होगे रहिस. जमीदार गैंद सिंह ह छापामार युध्द के तइयारी करत रहिस. बस्तर म माटी, रुख राई अउ अपन परम्परा के सिरजन अउ सुरक्षा बर मुरिया, कोई, हल्बा विद्रोह होइस जेमा आदिवासी परब, संस्कृति अउ उकर रीत पिरित के भाव रहिस.

छत्तीसगढ़ म 1857 के क्रान्ति के अगुवाई रइपुर जिला बलौदाबाजार तहसील के सोनाखान जमीदारी अभी के बलौदा बाजार जिला ले मानथे. इहा के जमींदार वीर नारायण सिंह रहिस. सन 1856 म आये अकाल म भूख पियास म ऐठत मनखे में जी जुदाई बर विद्रोह कर कसडोल के साहूकार माखन लाल के गोदाम ल लूट लीन. तेकर सेती चार्ल्स इलियट ह ओला रइपुर के जय स्तम्भ चौक म 10 दिसम्बर 1857 के फांसी के सजा सुनाईन. वोह आजादी के ए लड़ाई म पहिली शहीद बनीन. वीर नारायण ह अपन अन्तस् के आवाज ल कभू दबन नई दिस.

संबलपुर म सुरेंद्र साय घला अंग्रेज सरकार के गलत नित बर विद्रोह करिन.1884 म उनला फांसी के सजा घला होइस. वोहा आजादी के लड़ाई के आखरी शहीद रहिस. इही समय म सैंकड़ों सैनिक मन रइपुर के छावनी म विद्रोह करदिन जेकर अगुवा छत्तीसगढ़िया माटी के मंगल पांडे हनुमान सिंग ह रहिस. वोह जुल्मी गवरनर सिडवेल ल जनवरी 1858 म मार दिस. उँकर 17 झन संगवारी ल पकड़ के फांसी के सजा सुनादिन अउ विद्रोह ल कुचल दिन.

भारत के संग संग छत्तीसगढ़ के अलग अलग जगा म अंग्रेज मन के विरोध अलग अलग ढंग ले होवत रहिस. जेमा रविशकर शुक्ल, बैरिस्टर छेदीलाल, नारायणलाल मेघावले, नत्थू जी जगताप, घनश्याम गुप्त, कुंज बिहारी चौबे आसन कतनो सेनानी मन अगुवाई करत रहिस. छत्तीसगढ़ के धमतरी म कंडेल नहर सत्यग्रह ह गांधीजी ल आये बार मजबूर कर दिन. पण्डित सुन्दर लाल शर्मा, नारायनलाल मेघवाले, छोटेलाल श्रीवास्तव मन एकर अगुवा रहिस, पण्डित सुंदर लाल शर्मा जी के अछूत उध्दार के काम ले तो गांधीजी अतका प्रभावित होइस की वोला अपन गुरु घला मानिस.

मजदूर किसान ल संगठित कर उकर हक बर लड़े के काम ठाकुर प्यारे लाल सिंह ह के अगुवाई म होइस।एसनहा रुद्री नवागांव सत्याग्रह अउ जगा जगा आजादी बार लीक सियान जवान सब्बो के मेहनत अउ बलिदान ह आजादी के नव सुरुज ल देखाइस.

सिरतोन म अपन अधिकार बर खुदे ल आगू आये ल परथे अपन माटी म अपन परब रीतअउ नीत ह तो सुराज आय. आजादी के नव सुरुज म जन्म लेहन के हमर भाग ल सँवारे ल चाही. फेर जबतक हमन ए अधिकार के बने ढंग ले उपयोग नई करबो त एकर कोनो मतलब नई होवय. आवव हमें हमर भुइया बर रख्वारी अउ खुशहाली बार उदिम करन इही ह देशभक्त मन बर सही म हमर श्रधांजलि होही.

मम्मी-पापा आप ही मेरे ऐश्वर्या राय और आप मेरे जेम्स बॉन्ड

लेखक - निशांत शर्मा

मम्मी पापा जब से होश संभाला आप दोनों को ही अपना रोल मॉडल माना, जाना, पहचाना. जैसे जैसे बड़ी होती गई आप दोनों को कॉपी करती गयी. कोशिश करती थी कि आप जैसा करते हो वैसा करूं, वैसी दिखूं. पापा, इसी चक्कर में कभी आपके जैसे वयस्क बनकर शेविंग क्रीम लगाकर शेविंग करने की एक्टिंग करती थी, तो कभी मम्मी जैसे बेलन और आटा लेकर रोटी बेलने की कोशिश करती थी. कभी आपके जैसे पावर वाला चश्मा लगाकर पेपर पढ़ने की एक्टिंग करती थी, तो कभी मम्मी जैसे होठों पर लिपस्टिक लगाकर कांच को घंटों निहारने की एक्टिंग करती थी. मुझे मालूम है मम्मी-पापा आप दोनों ने मुझे लालने पालने के लिए अपनी

पाई पाई कमाई व पूरी मेहनत लगा दी. मेरी पढ़ाई के लिए उधार तक आपने लिया ताकि मैं पढ़ लिखकर बड़ी अफसर आई.ए.एस. कलेक्टर बनूँ. आपने अपने पेट की भूख काटकर मेरा पेट भरा. आपने अपना मन मार कर मेरे शौक को पूरा किया. मम्मी-पापा मैं यह आपको विश्वास दिलाती हूं कि मैं आपकी मेहनत एवं समर्पण को व्यर्थ नहीं जाने दूंगी. आप दोनों का नाम पूरे जग में रोशन करूंगी. आप दोनों ही मेरे शिव-पार्वती हैं. आप ही मेरे विष्णु-लक्ष्मी हैं. आप दोनों हो तो मैं हूं वरना मैं कुछ भी नहीं. आप ही दोनों मेरी ऊर्जा आप दोनों ही मेरी शक्ति हो. आप ही मेरे जीवन रूपी पिक्चर के ऐश्वर्या राय और आप ही मेरे जेम्स बॉन्ड हो. लव यू मम्मी लव यू पापा.

<u>नागपंचमी के तिहार</u>

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

हिन्दू समाज में देवी - देवता के पूजा करे के साथ - साथ पशु - पक्षी अऊ पेंड़ - पौधा के भी पूजा करे के रिवाज हे. सब जीव - जन्तु उपर दया करना हिन्दू समाज के परम्परा हरे. उही परंपरा के अंतर्गत हमर समाज में सांप के भी पूजा करे जाथे.

सावन महीना के अंजोरी पाँख के पंचमी के दिन नाग देवता के पूजा करे जाथे. ये दिन नाग पंचमी के रूप में मनाये जाथे. नाग पंचमी के दिन गाँव - गाँव में विशेष उत्साह रहिथे. ये दिन धरती ल खोदना मना रहिथे. आज के दिन नाग देवता ल दूध पियाय के परंपरा हे. एकर पहिली माटी के नाग देवता या चित्र बनाके ओकर पूजा करे जाथे. नारियल, धूप , अगरबत्ती जलाके दूध चढ़ाये जाथे अऊ कोनो परकार के हानि मत पहुंचाय कहिके विनती करे जाथे.

आज के दिन गाँव - गाँव में कुसती प्रतियोगिता होथे. जेमे आसपास के बड़े - बड़े पहलवान मन आके अपन दांव पेंच देखाथे, अऊ वाहवाही लूटथे.

हमर देश ह कृषि प्रधान देश हरे. खेत मन में सांप ह रहिथे अऊ जीव - जन्तु, मुसवा आदि मन फसल ल नुकसान पहुंचाथे ओकर से भी रकछा करथे. एकरे पाय एला छेत्रपाल भी कहे जाथे. साप ह बिना कारन के कोनो ल नइ काटे. जेहा ओला नुकसान पहुंचाथे या मारे के कोशिश करथे उही ल काटथे अइसे कहे जाथे.

नाग पंचमी के एक पौराणिक कथा हाबे. एक किसान अपन परिवार सहित राहत रहिस. ओकर दू बेटा अऊ एक बेटी रहिस. एक दिन किसान ह अपन खेत में नांगर जोतत रहिस त माटी के नीचे दबे सांप के तीन ठन पिला ह मरगे. अपन पिला मन ल मरे देखके नागिन ह बहुत दुखी होइस अऊ बदला लेके ठान लीस. रात कुन जब किसान के पूरा परिवार सुते रहिस त नागिन ह आके किसान ओकर बाई अऊ दूनो बेटा ल चाब के भागगे. ओकर बाद दूसर दिन नागिन ह जब लड़की ल चाबे बर आइस त लड़की ह ओला देख डरिस अऊ दूध के कटोरा ल ओकर आघू में मढ़ा दीस अऊ हाथ जोड़ के छमा मांगिस.

ओकर कलपना ल देखके नागिन ल दया आगे अऊ खुश होके वरदान मांगे ल बोलीस. त लड़की ह अपन दाई ददा अऊ दूनो भाई ल जिंदा करें के वर मांगिस. त नागिन ह तथास्तु कहिके जिंदा कर दीस.

वो दिन से पंचमी के दिन नाग पूजा करे के परंपरा चलगे. आज के दिन खेत में कोनो नांगर नइ चलायें अउ जमीन ल भी नइ खोदे. आज के दिन जेहा सच्ची श्रध्दा भक्ति से नाग देवता के पूजा करथे ओला नाग देवता के आशीरवाद मिलथे अऊ ओला सांप ह नइ काटे. जय नाग देवता.

संस्मरण - भोजली पर्व

लेखिका एवं चित्र - श्वेता तिवारी

छत्तीसगढ़ का पारंपरिक त्योहार ग्राम बेलगहना के शासकीय प्राथमिक विद्यालय बेलगहना म हर्षोल्लास के साथ मनाय गिस. भोजली छोटे-छोटे लइका संग उखर माता मन भाग लिन औउ "देवी गंगा लहर तुरंगा" की धुन म गीत गात गली मोहल्ले में यात्रा निकालीन. विद्यालय ल समुदाय से जोड़े के सेति यह प्रयास करथन.

भोजली पर्व ह मितानी-मितान के नाम से जाने जाथे. हमरे छत्तीसगढ़ के लोक पर्व भोजली मां सुख शांति के संदेश देथे. भोजली के भुइयां मा पानी रहे यह विश्वास आस्था के प्रतिक हे. विद्यालय म माता मनके भागीदारी बढ़ाए बर विद्यालय में लोक पर्व भोजली मनाय गय. शिक्षा म गुणवत्ता लाए बर माता मन ल जागरूक करना जरुरी है.इखरे ख़ातिर शिक्षिका श्वेता तिवारी विद्यालय म लोक पर्व मनाय जेमा माता मन ला आमंत्रित कर स्कूल के गतिविधि ल जाने गृह कार्य में का मिलीस. सब्बो माता मन कक्षा के जानकारी लेके लइका के स्तर सुधारे में मदद कर सकत हे.

बच्चे हैं तो सब हैं, बच्चे नही तो कुछ भी नहीं

लेखक - निशांत शर्मा

जिस घर में बच्चों की खिलखिलाने की आवाज नहीं आती वो घर हीरे, सोने का भी क्यो न बना हो निर्थक व व्यर्थ है. बच्चों से ही घर हैं, बच्चों से ही दादा, बच्चो से ही दादी माँ, बच्चों से ही भुआ चाची और बच्चों से ही चाचू.

बच्चों के कारण ही दादू भी ऊंट-घोड़ा बन जाते तो दादी मां कभी बिल्ली तो कभी बकरी. बच्चो के कारण ही घर के बड़ो के दिल के अंदर से भी एक प्यारी सी नटखटपन शैतान मस्ती निकलती है और वो भी बच्चे बन जाते हैं. सच कहूँ तो बच्चे ही है जो घर की रौनक बढ़ाते हैं वरना घर में सबके होते हुए भी सूनापन काटता है. बच्चे जब खिलखिला कर हसते हैं तो तो लगता है कि स्वयं घर में खुदा हँस रहा है. पैसे तो बहुत कमा लोगे जीवन में मगर समय निकालकर बच्चों के साथ बच्चे बनना करोड़ो अरबो रुपये डॉलरों से भी बढ़कर है. बच्चों की एक हँसी आपके 7 जन्मों की कमाई हुई अरबो खरबो की दौलत से भी कई ज्यादा है जिसका कोई मोल नहीं. बच्चे हैं तो सब है, नहीं तो कुछ भी नहीं.

मोर पहली शिक्छक

(भारतरत्न डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम मिसाईल मैन एवं पूर्व राष्ट्रपति के अदम्य साहस लेख अंश से लिया गया स्वविचार)

छत्तीसगढ़ी में अनुवाद - योगेश ध्रुव "भीम"

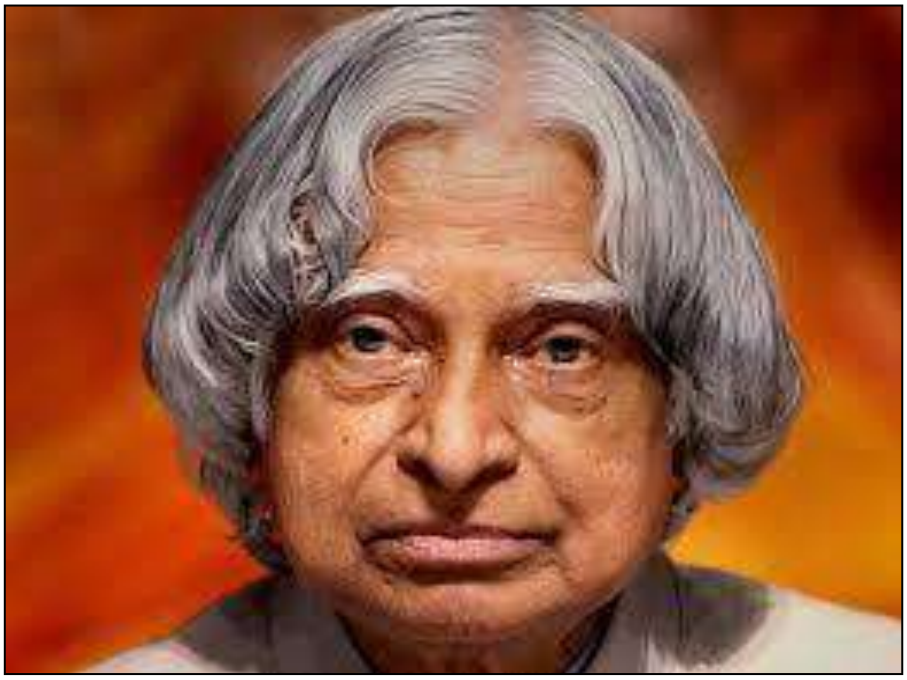

जब मे हर रामेश्वरम म कक्छा पांचवी में पढ़त रहेंव त सिरी शिव सुब्रमण्यम अय्यर मोर पहली शिक्छक राहत रिहिस. ओहर हमर स्कूल के सबले बढ़िया शिक्छक घलो रहाय. ओखर कक्छा म सबो झन ल उपस्थित रहवई ह सब ले बढ़िया घलो लागे.

एक दिन ओहर चिरई मन के उड़ई के बारे म समझाय के उद्देश्य ले कक्छा म व्याख्यान घलो दिस. ओहर तख्ता म डेना,पूछी अउ मुड़ी ल बढ़िया ढंग ले बतावत एक ठन चिरई के फोटो बनईस. ओखर बारे मे बतइस कइसे ओहा अपन डेना ल

फड़फड़ावत चिरई ह उड़ई ल करथे अउ कइसे अपन पूछी के सहारा ले उड़ई के दिसा ल बदलथे घलो. इहि बिसय म ओहर पचीस मिनट ले भासन दिस. उही भासन म ओहर चिरई के उड़ई, अकास म एकदम रुकई अउ समूह म उड़ई जइसे कई ठन धारना मन ल बिस्तार ले समझईस घलो.

कक्छा के आखरी म ओहर पढ़या मन ल पूछय घलो,में हर पढ़ाए हावव ओला समझ पाव की नही? मैहर बोलेव मोला समझ नई आइस. त इहि बात ल दूसर पढ़इया मन ल घलो दोहराय. सिरी अय्यर ह हमर बात मन ल सुन के नइ विचलित होइस,बल्कि ओहर सबो पढ़इया मन ल साम के बेरा म समुन्दर के तीर म पहुचेल घलो बोलिस. उही साम रामेश्वरम के समुन्दर तट म पूरा कक्छा के पढ़इया मन ह इक्कठा होय रिहिस. रेती के टीला ले समुन्दर के लहरा मन ह टकराय तेखर मजा ल बहुत उठायेन. हमर शिक्छक अय्यर जी ह हमन ल दस अउ बिस के समूह म उड़ावत समुन्दर चिरई मन ल देखाइस. ओला देख के हमन बहुत चकरायेन घलो. उड़ावत चिरई कोती इसारा करत हमन ल किहिस की उड़ावत चिरई ल गौर से देखव अउ उड़ावत समय ओहर कइसन नजर आथे, अउ कइसन परकार ले अपन डेना ल फड़फड़थे घलो. शिक्छक ह ए बात म जोर दिस की चिरई मन के पूछी ल ध्यान लगाके देखना चाही अउ लक्छ करना चाही की अपन इच्छित दिसा म मुड़े बर अपन पूछी के उपयोग ल कइसन करथे.

एखर बाद म ओहर एक ठन प्रश्न पूछिस - चिरई के शरीर म मशीन ह कहां हावे अउ ओ मशीन ल शक्ति बर बल कहाँ ले मिलथे घलो? त ओहर समझईस कि शक्ति हर ओखर जीवन अउ उड़ान भरे के पेरना ले मिलथे. ये सबो बात ल बास्तविक जीवन के घटना के उदाहरन ल देके समझईस घलो. सिरी अय्यर ह एक महान शिक्छक रिहिस. ओ हमन ल प्राकृति म उपलब्ध बास्तविक उदाहरन के आधार म सैध्दान्तिक बिशय के ज्ञान ल देवे. ऐला कथे सच्चा अध्यापन.

मोर बर ये घटना ह सिरिफ चिरई के उड़ई-किरया ल समझई तक सीमित नइ रिहिस. चिरई के उड़ई पाठ ह मोर करेजा म खास भावना ल घलो जगा दे रिहिस.

मे हर सोचेव भबिस्य म पढ़ाइ के करम म उडई अउ उड़ान-परनाली ले जारी राखहु. सिरी अय्यर के अध्यापन अउ समुन्दर-किनारे के ओ दिन के घटना ह मोर भबिस्य म मोला अपन पेसा चुनई म मोर मदद घलो करिस.

एक दिन कक्छा समाप्त होय के बाद म साम के बेरा म अपन शिक्छक ल पुछेव की कइसन परकार उड़ान-परनाली ले संबंधित अध्ययन जारी रखे बार आगु पढाई करे जाए? ओहर मोल आराम ले बढ़िया समझइस की पहले तय अपन आठवीं के पढाई ल पूरा कर, फेर हाई स्कूल कर, ओखर बाद म उड़ान-परनाली के सिक्छा प्राप्त करे बर कोई इंजीनियरिंग कॉलेज म दाखिला लेबे. ओहर कहिस की यदि मे हर अपन पूरा पढाई ल अच्छी तरह ले कर लेथो त उड़ाई बिज्ञान के छेत्र म कुछु करें मा सक्छम हो सकहु. ओखर सलाह ले चलत मे हर जब कॉलेज म दाखिला लेव त में हर भौतिकी म अध्ययन ल करेव अउ मदरास इस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी म मेहर ऐरोनाटिक्स इंजीनियरिंग बिसय ल चुनेव. चिरई के उड़ाई के परदरसन अउ शिक्छक मोहदय के ये सलाह मोर जीवन ल एक ठन लक्छय दिस. ऐखर से मोर जीवन म एक नवा मोड़ अईस अउ संजोग से,इहि ले मोर पेसा ह घलो तय होइस. एक रॉकेट इंजिनियर, एरोस्पेस इंजीनियर,परउद्योगिकवेत्ता के रूप म मोर जीवन रुपान्तरित घलो होइस.

"ज्ञान प्राप्त करने के लिए चिंतन एवं कल्पना की स्वतंत्रता आवश्यक है और शिक्षक को इनके लिए उपयुक्त माहौल का निर्माण करना चाहिए"

शिक्षक दिवस

लेखिका - पद्यमनी साहू

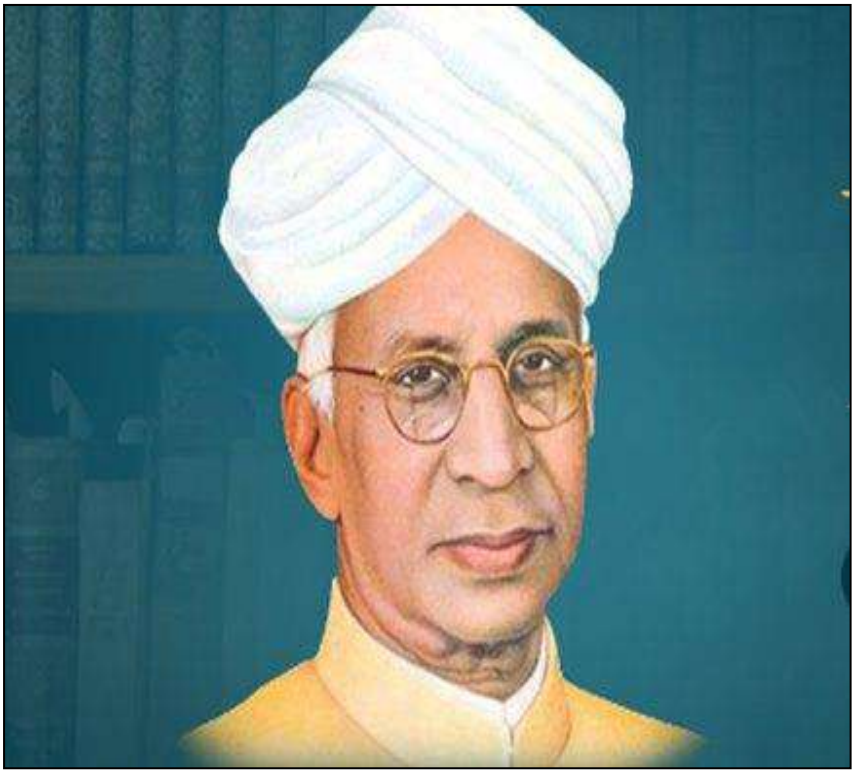

सुबह जल्दी उठकर दादा जी तैयार हो गए. अपनी घड़ी व रुमाल के लिए बहु रानी को आवाज लगाई. माधवी दादाजी की छड़ी और शाल लेकर आई. अपने मधुर स्वर से दादाजी को पूछने लगी - 'दादू आप कहां जा रहे हैं?' दादा जी ने - 'कहा बेटी आज शिक्षक दिवस है. मैं जी.सी. स्कूल में पढ़ाता था. वहीं जा रहा हूं. शिक्षक सम्मान समारोह में मुझे आमंत्रित किया गया है.' माधवी बड़े भोलेपन व मासूमियत से दादाजी को पूछने लगी - 'दादू यह शिक्षक दिवस सम्मान समारोह क्या होता है?' दादाजी ने माधवी को अपनी गोद में बिठा लिया और बताने लगे - 'बेटी आज के दिन, 5 सितंबर को, हमारे देश में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है. 5 सितंबर के दिन हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति श्री राधा कृष्ण जी का जन्मदिन है. राधा कृष्ण जी का जन्म तमिलनाडु राज्य के तिरुचिरापल्ली गांव में

हुआ था. राधाकृष्णन जी एक शिक्षक भी थे. शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान व उपलब्धि के कारण उनके सम्मान में उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है.' तभी माधवी का भैया शिवा भी क्रिकेट खेल कर आ गया और दादा जी के पास बैठ गया. शिवा दादा जी को बताने लगा उसके स्कूल में भी प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस मनाया जाता है. देश के राष्ट्रपति होते हुए भी राधाकृष्णन जी शिक्षक कहलाना अधिक पसंद करते थे. माधवी ने दादा जी से प्रश्न किया - 'दादू इस दिन मनाए जाने वाले शिक्षक सम्मान समारोह में क्या क्या होता है?' दादाजी ने बताया - 'मेरी नन्ही परी, इस दिन समाज में शिक्षक की भूमिका, उनके महत्व व कर्तव्य को याद किया जाता है. बच्चों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक के अपूर्व योगदान को याद किया जाता है. शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य करने वाले शिक्षकों का, प्रतीक चिन्ह एवं श्रीफल से सम्मान किया जाता है. इतने में बहुरानी भी नाश्ता लेकर आ गई. दादाजी, शिवा और माधवी ने साथ बैठ कर नाश्ता किया. शिवा अपने स्कूल की ओर जाने लगा. दादाजी भी शिक्षक सम्मान समारोह में चले गए.

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

शरारती बंदर

राजवन में राजू बंदर की शरारतों से सभी जानवर परेशान थे. वह आए दिन सबके साथ शरारत करता था. जंगल के सभी जानवर उसे समझाते, फिर भी वह किसी की बात नहीं सुनता था. एक बार स्कूल में हिन्दी के टीचर ने राजू को जोरदार डांट लगाई. लेकिन उसने उनका भी मजाक उड़ाया. राजू ने दूसरे दिन उनकी कुर्सी पर खुजली की पत्ती रख दी, जिससे पूरे शरीर में उनको खुजली होने लगी.

राजू सिर्फ स्कूलों में ही नहीं, बल्कि घर के पड़ोसियों को भी परेशान करता था. वह पड़ोसी की भैंसों को भी तंग करता. एक दिन तो उसने भैंस की पूंछ के सारे बाल कुतर डाले. एक बार स्कूल से घर जाते समय उसे लंबा जिराफ मिला. जिराफ

लंगड़ा कर चलता था. राजू उसे लंगडू-लंगडू कहकर चिढ़ाता था. जिराफ समझाने के लिए उसके पास जा रहा था, लेकिन राजू ने सोचा शायद जिराफ उसकी पिटाई के लिए आ रहा है. उसने झट से सड़क की ओर छलांग लगा दी. सड़क पर छलांग लगाते समय राजू कार की चपेट में आ गया. जंगल के सभी जानवर वहां पर आ गए. राजू को देखने के लिए जिराफ भी वहां पर पहुंच गया.

हमे बहुत से लागों ने यह कहानी पूरी करके भेजी है. उनमें से कुछ हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

कन्हैया साहू 'कान्हा' व्दारा पूरी की गई कहानी

बंदर का एक पैर टूट गया. जिराफ ने बंदर को देखकर कहा कि जैसी करनी वैसी भरनी, तुमने जंगल के सभी जानवरो का जीना हराम कर दिया था. सभी को बहुत परेशान किया सबके समझाने पर भी तुम सुधरने का नाम ही नही ले रहे थे. भगवान ने तुम्हे तुम्हारी जानबूझ कर बार बार किये गलती की सज़ा आज दे ही दिया. बंदर को अब अपनी गलती का अहसास हो चुका था. उसने रोते हुए सभी जानवरो से माफी मांगी और हाथ जोड़कर निवेदन किया कि आप सब मेरी मदद करो मुझे डॉक्टर के पास ले चलो नही तो मैं मर ही जाऊंगा. अब बंदर की इस हालत को देखकर सबका दिल पसीज गया हाथी ने उसे अपनी सूंड में उठा लिया और उसे डॉक्टर खरगोश के पास ले गया. खरगोश ने उसका मरहम पट्टी किया. अब बंदर को कुछ राहत महसूस हुआ तो उसने हाथी को धन्यवाद दिया और ये कसम लिए कि अब आगे से मैं किसी भी जानवर का मज़ाक नही उड़ाऊंगा और सबका सम्मान करूँगा. सभी जानवरो ने बंदर को माफ कर दिया. अब बंदर लगड़ा लगड़ा कर चलता, उसका उछलकूद बहुत कम हो गया वह अपने इस हालत के लिये बहुत दुखी रहता और सोचता कि मैंने जंगल के सभी जानवरो को जो परेशान किया ये उसी का नतीजा है. इससे सीख मिलती है कि - बिना विचारे जो करे सो पीछे पछताय.

इंद्रभान सिंह कंवर व्दारा पूरी की गई कहानी

वह राजू को समझाना चाह रहा था. मगर राजू बंदर की हालत देखकर वह चुप रह गया, क्योंकि उसे काफी चोटें आई थी उसने राजू बंदर को वहां मौजूद जानवरों के साथ मिलकर अस्पताल में भर्ती करवाया. वह राजू बंदर को समझाना चाह रहा था,मगर प्यार से क्योंकि वह एक नटखट प्यारा बच्चा था.

वह प्रतिदिन राजू बंदर से मिलने अस्पताल जाता, उसके लिए फल फूल लेकर. राजू बंदर उसे देख कर डर जाता, किअब वह उसे डांटेगा मगर जिराफ उसे कुछ न कहता. जंगल का कोई भी जानवर उससे मिले नहीं जाता ना ही उसका हालचाल पूछता, क्योंकि सभी उसकी शरारतो से तंग आ चुके थे. अस्पताल पर पड़े पड़े उसे इस बात का आभास होने लगा था. मगर लंगड़ा जिराफ प्रतिदिन उसके लिए फल लेकर उसे देखने जाता है.

एक दिन राजू बंदर ने जिराफ से कहा जंगल का कोई भी जानवर मुझे देखने मिलने यहां नहीं आता. मैंने तुमको इतना परेशान किया मगर फिर भी तुम मुझसे प्रतिदिन मिलने आते हो. अब जिराफ को समझाने का सही अवसर मिल गया. उसने राजू बंदर को कहा- देखो राजू तुमने जंगल में सभी को परेशान कर दिया था, सभी तुमसे तंग आ चुके थे इसलिए तुमसे मिलने कोई नहीं आता उल्टा सभी लोग खुशी मना रहे हैं. यदि तुमने उन सभी से अच्छा बर्ताव किया होता तो वह तुमसे मिलने जरूर आते. संसार का नियम है कि जो जैसा बीज बोयेगा, उसे वैसा ही फल प्राप्त होगा. राजू को सारी बातें समझ आ गईं. उसने जिराफ से माफी मांगी और उसे वचन दिया कि अब से आगे वह किसी को भी परेशान नहीं करेगा उल्टा सभी की सहायता करेगा और सभी से मित्रवत व्यवहार रखेगा.

सीख- हमें सभी से मित्रवत व्यवहार रखना चाहिए, क्योंकि हम लोगों के साथ जैसा व्यवहार रखेंगे लोग हमसे भी वैसा ही व्यवहार करेंगे.

चन्द्र प्रकाश चतुर्वेदी व्दारा पूरी की गई कहानी

कार से टकराने के बाद राजू को चोट आ गई थी. सभी जानवर उसे अस्पताल ले गए. सभी उसकी देखभाल करने लगे. राजू ठीक तो हो गया पर अभी भी लंगड़ाकर चलता है. राजू को पछतावा हुआ. राजू अब बदल गया है. सभी जानवर उसे अपना दोस्त समझने लगे हैं. वह सभी के साथ मित्रवत व्यवहार करता है.

दिलकेश मधुकर व्दारा पूरी की गई कहानी

कार से एक्सीडेंट होने पर राजू बेहोश हो गया. उसका बहुत सा खून बह गया था. सभी जानवर उसे देखने के लिए आ गये. जिराफ भी वहां पहुंच गया. उसने तुरंत ही 102 और 108 नंबर पर फोन किया. राजू को हास्पिटल ले जाया गया. वहां डॉक्टर ने बताया कि राजू को खून चढ़ाना पड़ेगा. तब जिराफ ने अपना खून दिया और राजू ठीक हो गया. राजू को डॉक्टर ने पूरी बात बताई. अब राजू सुधर गया और सभी जानवरों से अपनी शरारतों के लिए माफी मांगा. राजू अब रोज स्कूल जाने लगा और मन लगाकर पढ़ने लगा. पढ़-लिखकर वह कलेक्टर बन गया. अब सभी खुशी खुशी रहने लगे.

पद्यमिनी साहू व्दारा पूरी की गई कहानी

राजू बंदर ने सड़क की ओर छलांग लगाई और एक कार की चपेट में आ गया. जंगल के सारे जानवर वहां आ गए. जिराफ भी वहीं था. जब राजू की आंख खुली तो राजू ने अपने आपको अस्पताल में पाया. उसने देखा कि जंगल के सभी जानवर वहां थे. सभी के चेहरे पर राजू की हालत को लेकर चिंता साफ झलक रही

थी. राजू के होश में आने से सबकी जान में जान आई. जीरा चाचा ने बताया कि कार बहुत तेज रफ्तार से आ रही थी जिससे तुम्हें बहुत चोट पहुंची. तुम अपने होश खो बैठे. हम सबने तुम्हें अस्पताल में भर्ती कराया. तभी डॉक्टर साहब आए और राजू को आराम करने के लिए कह गए. डॉक्टर ने समझाया कि आप सब घर जाएं. एक दो लोग ही राजू के साथ रह सकते हैं. राजू आराम करते-करते गहरी सोच में डूब गया. उसने सोचा कि मैंने जिन लोगों को इतना परेशान किया उन्होंने मुझे यहां लेकर आए. जिराफ को मैं लंगड़ा कह कर उसके दिल को ठेस पहुंचाता था. वह भी मेरे पास डाटा रहा. यही सोचते-सोचते राजू की आंख लग गई. जब सुबह राजू ने आंख खोली तो उसके हिंदी टीचर सामने खड़े थे. राजू को बहुत आश्चर्य हुआ. टीचर ने राजू को समझाया - 'आज तुम्हारी शरारतें तुम्हारी जान पर बन आई हैं' राजू की आंखों से आंसू बहने लगे. उसने अपने टीचर व जंगल के सभी जानवरों से वादा किया कि अब वह कभी शरारत नहीं करेगा और किसी का दिल नहीं दुखाएगा. सभी ने राजू को दुआएं व आशीर्वाद दिया कि राजू जल्दी स्वस्थ होकर घर व स्कूल वापस आ जाए. राजू के माता पिता ने जंगल के सभी जानवरों को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया कि समय रहते उन्होंने राजू को अस्पताल पहुंचाकर उसकी जान बचाई.

अगले अंक के लिये अधूरी कहानी -

<u>राक्षस और राजकुमारी</u>

एक राजा की तीन बेटियां थीं. तीनों बेहद खूबसूरत थीं. सबसे बड़ी बेटी का नाम आहना उससे छोटी याना और सबसे छोटी का नाम सारा था. एक बार तीनों अपने राज्य के जंगल में घूमने निकलीं. अचानक तूफान आ गया. उनके साथ आया सुरक्षा दल इधर-उधर बिखर गया. वे तीनो जंगल में भटक गई थीं.

थोड़ी दूर चलने पर उन्हें एक महल दिखाई दिया. अंदर जाकर देखा तो वहां कोई नहीं था. उन्होंने वहां विश्राम किया और टेबल पर रखा भोजन खा लिया. सुबह होते ही सारा उस महल के बगीचे में घूमने निकल गई. सारा ने वहां गुलाब देखे और बिना कुछ सोचे उन्हें तोड़ लिया. उसके फूल तोड़ते ही उस पौधे में से एक राक्षस बाहर आ गया, उसने सारा से कहा कि मैंने तुम्हें रहने के लिए घर और खाने के लिए भोजन दिया और तुमने मेरे ही पसंदीदा फूल तोड़ दिए. अब मैं तुम तीनों बहनों को मार डालूंगा.

सारा बहुत डर गई उसने विनती की, लेकिन राक्षस नहीं माना. फिर राक्षस ने एक शर्त रखी कि तुम्हारी बहनों को जाने दूंगा पर तुम्हें यहीं रुकना होगा.

अब इस अधूरी कहानी को जल्दी से पूरा करके हमें भेज दो. कहानी भेजने का ई-मेल है - dr.alokshukla@gmail.com. कहानी तुम वाट्सएप से 7000727568 पर भी भेज सकते हो. सभी अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें कई मज़ेदार कहानियां मिली हैं, जिन्हें हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

दिव्यांगता अभिशाप नहीं वरदान

लेखक - इंद्रभान सिंह कंवर

ज्ञान सिंह और राजकुमारी के यहां जब तीन बेटों के बाद लक्ष्मी रूपी एक नन्ही परी का जन्म हुआ, तब उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा. वह दोनों और उनका परिवार काफी खुश थे. मगर उनकी खुशी ज्यादा दिन तक स्थिर ना रह सकी. जैसे-जैसे उनकी लाडली परी डिंपल बड़ी होने लगी, वैसे-वैसे उनका दुख और भी बढ़ता गया. उनके दुख का कारण था डिंपल की दिव्यांगता. उनका परिवार काफी निराश था कि अब आगे क्या होगा.

अब डिंपल बड़ी होने लगी. वह 5-6 वर्ष की हो चुकी थी. थोड़ा जानने समझने लगी थी. अपने तीन बड़े भाइयों को खेलते कूदते स्कूल जाते देखती तो उसका भी मन यह सब करने को होता. मगर वह करे तो करे क्या. मां-बाप से कहती तो वे उसकी दिव्यांगता की दुहाई देकर उसे चुप कर देते, कि तू क्या करेगी पढ़ लिखकर बेचारी डिंपल मन मारकर बैठ जाती.

डिंपल के 6 वर्ष के होते ही जैसे ही यह बात वहां के विद्यालय के शिक्षक वर्मा जी को पता चली वह तुरंत ही डिंपल के यहां गए और उसके पालक से संपर्क कर उसका दाखिला विद्यालय में कराने कहा. उसके पालक यह सोचने लगे कि कहीं विद्यालय में उसका मजाक तो नहीं उड़ाया जाएगा. तब शिक्षक वर्मा जी ने उनकी सारी शंकाओं को दूर किया और कहा कि कल से वे स्वयं डिंपल को लेने घर आएंगे.

जब शिक्षक वर्मा जी डिंपल के घर पहुंचे तो वहां डिंपल पहले से ही विद्यालय जाने को लेकर तैयार बैठी थी. इस तरह से उसका शाला में प्रवेश हुआ. अब वह पहले से काफी खुश थी.

एक दिन विकास खंड कार्यालय से मैडम यादव जी आईं जो इस तरह के बच्चों पर कार्य करती थी. उन्होंने डिंपल की चंचलता और उत्सुकता को देखा, और फिर शासन की सहायता से व्हील चेयर, छात्रवृत्ति आदि सुविधाएं प्रदान कीं.

डिंपल की खुशी देखकर उसके माता-पिता भी काफी खुश थे. अब बड़े मजे से वह अपने दोस्तों के साथ व्हील चेयर पर बैठकर स्कूल जाती पढ़ाई लिखाई करती. वहां उसके काफी दोस्त भी बन गए थे जो उसको साथ में विद्यालय लेकर जाते. जब डिंपल से पूछा गया कि वह बड़ा होकर क्या बनेंगी, तब उसने बताया कि वह

कलेक्टर बनेगी और अपने जैसे अन्य बच्चों की पूरी सहायता करेगी ताकि वे भी सामान्य जिंदगी जी सकें क्योंकि - यह दिव्यांगता अभिशाप नहीं वरदान है.

सीख - तो आइए हम सब भी मिलकर ऐसे डिंपल जैसे बच्चों की सहायता करें जो दिव्यांगता को अभिशाप मानकर कुंठित जीवन जी रहे हैं. उन्हें भी सामान्य जिंदगी जीने का अवसर प्रदान करें और यह बताएं कि यह दिव्यांगता अभिशाप नहीं वरदान है.

तीन सहेलियां

लेखक चन्द्र प्रकाश चतुर्वेदी

एक शहर में तीन सहेलियां रहती थीं. एक का नाम डॉली, दूसरी का मीना एवं तीसरी का नाम रीना था. तीनो एक ही कक्षा में पढ़ती थीं. तीनो एक साथ खेलती थीं एवं साथ-साथ स्कूल जाती थीं. डॉली सबसे सुंदर थी. उसके लंबे बाल थे. वह किसी गुड़िया की तरह ही दिखती थी. इसीलिये सब उसे डॉली कहते थे. परन्तु उसके पैरों में समस्या थी इसलिये उसे व्हीलचेयर पर चलना होता था. मीना और रीना डाली की मदद करती थीं. वह उसे अपने साथ ही उसे स्कूल ले जाती थीं. डॉली पढ़ने लिखने मे भी सबसे तेज़ थी. वह पढ़ने में अपने दोस्तों की भी मदद करती थी. स्कूल में सभी शिक्षक डॉली की प्रशंसा करते थे; तीनो सहेलियां स्कूल की सभी गतिविधियों में भाग लेती थीं. सभी इन तीनों सहेलियों की मिसाल दिया करते थे.

स्कूल से वापस आने पर तीनो गार्डन में घूमने जाती थीं. गार्डन में शेरू नाम का कुत्ता हमेशा उदास बैठा रहता था क्योंकि उसका कोई दोस्त नहीं था. वह प्रतिदिन इन तीनो को देखता और सोचता काश मेरा भी कोई दोस्त होता. एक दिन तीनो

दोस्त शेरू के पास गईं और उसकी उदासी का कारण पूछा. कारण जानने पर तीनो ने शेरू को अपना दोस्त बना लिया. शेरू अब खुश हो गया. चारों अब गार्डन में मिल कर खेलने लगे.

शिक्षा - दोस्तों में हमेशा सहयोग की भावना होना चाहिए. जीवन में दोस्त होना बहुत ज़रूरी है.

व्हीलचेयर

लेखक - दिलकेश मधुकर

मंजूलता उदास बैठी थी. पास ही उसका पालतू कुत्ता मोती भी चुपचाप बैठा था. तभी उसकी सहेली रवीना पास आई और उसे बगीचे में घूमने जाने के लिए बोली. तब मंजूलता अपने पैर को दिखाते हुए कहा कि अभी कोरबा जिले में शिक्षा मड़ई कार्यक्रम के अंतर्गत खेलकूद प्रतियोगिता की तैयारी सभी स्कूलों में चल रही है. हमारे विद्यालय में खेल प्रभारी डी. मधुकर जी खेल का अभ्यास करा रहे थे. अभ्यास के दौरान मुझे चोट लग गया और मैं चल नहीं पा रही हूं.

तभी रवीना का भाई रविंद्र भी आ गया. उसने कहा कि मंजूलता को हम व्हीलचेयर में बैठाकर गार्डन घुमाने ले जा सकते हैं. मेरे मित्र देवेंद्र के चाचा के घर पर व्हीलचेयर रखी हुई है, जोकि उसे चुनाव कराने के लिए मतदान केंद्र के लिए मिली है, क्योंकि चाचा जी बीएलओ हैं.

रवीना ने कहा - ठीक है भाई, जल्दी से ले आओ. रविंद्र दौड़कर व्हीलचेयर ले आया. मंजूलता उस पर बैठ गयी. रवीना उसे पीछे से धक्का लगाते हुए गार्डन ले गयी. मोती भी पीछे-पीछे गार्डन गया. बगीचे में रंग-बिरंगे फूलों को देखकर मंजूलता का मन गदगद हो गया और उसने अपनी सहेली और उसके भाई रविंद्र को व्हीलचेयर पर लाने के लिए आभार व्यक्त किया.

सीख- हमें मित्रों की हमेशा मदद करनी चाहिए और सदा खुश रहना चाहिए.

आभा

लेखक - ओजस्वी ध्रुव

आभा कक्षा सातवीं में पढ़ती है. मां पापा और कुमुद मैम को छोड़कर, जो आभा कि कक्षा शिक्षिका है, उसे अन्य लोग विशेष प्रेम नहीं करते. आभा सामान्य बच्चों की तरह नहीं है. बचपन से उसके पैर कार्य नहीं करते. लेकिन उसके मां पापा ने उसे इसका अफसोस होने नहीं दिया और सामान्य बच्चों की तरह परवरिश की. कुमुद मैम भी अन्य शिक्षकों से हटकर आभा से सामान्य बच्चों की तरह व्यवहार करती हैं. एक बार जब स्कूल की ओर से पिकनिक पर जाने की योजना बनी तब सभी शिक्षकों ने आभा को ले जाने से मना कर दिया, लेकिन कुमुद मैम अपनी जिम्मेदारी पर आभा को ले जाने के लिए अड़ गईं. पिकनिक के दिन भी आभा के साथ सबने स्कूल जैसा ही बर्ताव किया, लेकिन कुमुद मैम ने आभा को अपने साथ रखा. आभा कुमुद मैम के साथ ज्यादा घुल-मिल कर रहती थी. जब सभी बच्चे और शिक्षक घूमने गए तब कुमुद मैम और आभा सभी के लिए पकवान बनाने में व्यस्त हो गए. दोनों बहुत खुश थे. आभा को इतनी खुश देखकर कुमुद मैम की आंखों में आसू आ गए. सभी लोग आकर पकवानों का स्वाद लेने लगे. सभी के मुंह से 'वाह' निकल पड़ा. सभी ने इसका श्रेय कुमुद मैम को दिया लेकिन कुमुद मैम ने सबको सच्चाई बताई कि सभी नये पकवान आभा ने बनाये हैं. मैम ने बच्चों को समझाया - 'बच्चों हम सबमें कोई न कोई कमी अवश्य होती है, लेकिन बहुत सारी खुबियां भी होती हैं. जैसे आभा शारीरिक रूप से कमजोर है लेकिन इसको बहुत सी रेसिपी आती हैं और यह अच्छा गाती भी है. अगर तुम कुमुद मैम के प्यारे बच्चे हो तो आभा को आज से अपनी दोस्त बनाओ और साथ में घुल-मिल कर रहो.' मैम की बातें सुनकर सभी बच्चे आभा से लिपट गए और सभी आभा के दोस्त बन गए. शिक्षकों ने भी प्रण लिया कि अब आभा के साथ भेदभाव नहीं करेंगे.

हमारा संकल्प - पर्यावरण की रक्षा

लेखिका - धारिणी सोरी

चिंकी,बादल और मिनी तीनो दोस्त थे. तीनो हमेशा साथ खेलते, स्कूल जाते और बगीचे में टहलने भी जाते थे. स्कूल में उनकी टीचर ने बताया कि हमारा पर्यावरण पहले से काफी अधिक दूषित और गन्दा हो गया है. पहले आज की जितनी गंदगी नही होती थी क्योंकि तब हरे-भरे पेड़ अधिक थे. लोग वृक्षो को देवता तुल्य मानकर पूजा करते थे. घरों से निकलने वाले धुंए को वृक्ष अवशोषित कर लेते थे जिससे पर्यावरण संतुलित हो जाता था. जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती गयी वैसे-वैसे लोगो की जरूरतें बढ़ती गईं और लोगो ने पर्यावरण को नुकसान पहुंचना अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु वृक्षो को काटना शुरू किया. उसी के परिणामस्वरूप आज हमारी धरती पूरी तरह से बीमार हो चुकी है. न जाने कब धरती का अस्तित्व समाप्त हो जाए.

चिंकी, मिनी और बादल बड़े ध्यान से टीचर की बातें सुन रहे थे. वे अक्सर पापा और दादाजी को यह कहते सुना करते थे कि कैसे वे बचपन मे पेड़ो से फल तोड़कर खाया करते थे. पेड़ो पर बन्दरो की तरह उछलकूद करना उनका पसंदीदा खेल होता था. पर आज न वो पेड़ है न उनके खेल. उनके स्थान पर बड़ी-बड़ी बिल्डिंग बन गई हैं. दिखावे के लिए सिर्फ छोटे-छोटे सजावटी पौधे रह गए हैं. तीनो ने मिलकर दादाजी से पुछा कि हम वातावरण को कैसे दूषित होने से बचा सकते हैं?

दादाजी ने बताया कि प्रदूषण बढ़ने का सबसे बड़ा कारण है पेड़ो की कटाई. अगर हम अपना अस्तित्व बचाना चाहते है तो हमे पेडों को बचाना होगा. सबने दादाजी से कहा कि वे इस नेक काम के लिए आगे आना चाहते हैं. दादाजी भी इस काम मे उनके साथ थे. इस काम की शुरुआत के लिए उन्होंने अपने घर से बगीचे तक जाने वाले रास्ते को चुना. अगले दिन दादाजी और बच्चे हवादार और छायदार वृक्ष

जैसे, नीम, पीपल करन, गुलमोहर आदि ले आए. घर से निकलते समय मिनी का पैर फिसलने से पैर की हड्डी खिसक गई. उसे तुरन्त ही अस्पताल जाना पड़ा.

पट्टी कराकर जब वह लौटी तो उदास हो गयी, कि वह आज पेड़ नही लगा पाएगी. परन्तु चिंकी और बादल के रहते मिनी कभी उदास हो सकती थी भला. दोनों उसे व्हील चेयर में बैठा कर बगीचे की ओर चल पड़े. उन्होने कहा हम तीनों मिलकर जरूर पेड़ लगाएंगे, और पर्यावरण को स्वच्छ बनाएंगे. चिंकी और बादल गड्ढा करके पेड़ लगाते और मिनी उस पर पानी डालती.

अगले दिन स्कूल में चिंकी बादल और मिनी ने टीचर को यह बात बताई. उनकी टीचर ने उनको शाबाशी दी और कहा कि अच्छे काम के लिए हमेशा आगे रहना चाहिए और सबको प्रेरित करना चाहिए. हमारा छोटा सा प्रयास पर्यावरण को बचाने में बड़ा योगदान हो सकता है.

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें वाट्सएप व्दारा 7000727568 पर अथवा ई-मेल से dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

O My Dear !

Author – Tikeshwar Sinha (Gabdiwala)

Come soon here

O my dear !

Let's go to the jungle

See the bear

On that rock

A rabbit is running

Near the tree

A small fox cunning

They are so happy

And being looked fine

They tell us always

With the great shine

<u>कान्हा छलिया</u>

लेखक - श्रवण कुमार साहू (प्रखर)

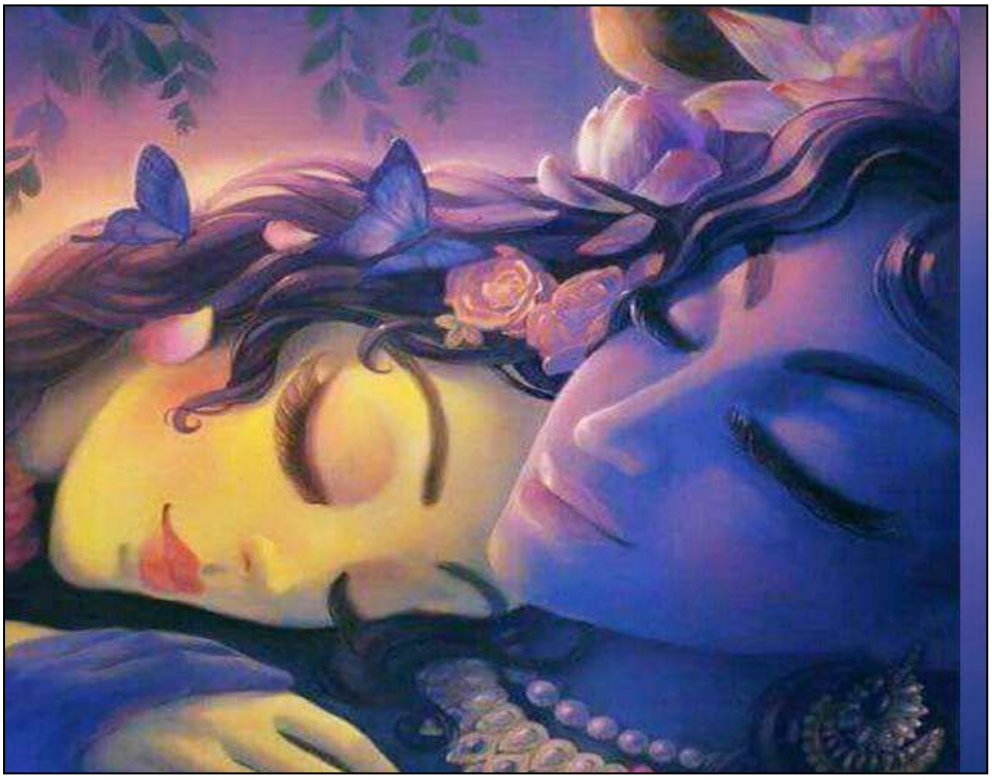

क़ाबर कहिथे कान्हा, तोला रे छलिया।

तन अउ मन दुनों ह, हावय तोर करिया।।

मीरा के पीरा ल, तेहा समझतेस।

जहर पिये बर क़ाबर, वोला तै देतेस।।

कहिथे दुनियां तोला रे, नटवर नागर।

तेहा करिया हरस रे, सुख के सागर।।

तोरा मया म जमुना होगे रे करिया।। क़ाबर--

राधा के जिनगी ह, तोर बिन हे आधा ।

प्रेम मिलन म, कइसन हावय रे बाधा।।

बिरहा के आगी म, राधा ह तड़पे ।

देखे बर तोला, मन ह रे तरसे।।

सौतन कस लागे रे, बंशी ह करिया।।क़ाबर--

अधरतिया तै कारागार म आए हस ।

कंस, पूतना सब के नाश कराए हस।।

महाभारत के जुध्द, तेहा कराए हस।

गीता के अमरित ग्यान, ल सुनाए हस ।।

गोपी मन के फोड़े, क़ाबर तै हड़िया।।क़ाबर–

किशन कन्हैया

(गीत -- सार छंद)

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

किशन कन्हैया रास रचैया, सबको नाच नचाये ।
बंशी की धुन सुनकर राधा, दौड़ी दौड़ी आये ।।

बैठ डाल पर मोहन भैया, मुरली मधुर सुनाये ।
इधर उधर सब ढूँढे उसको, डाली पर छुप जाये ।।

मधुर मधुर मुरली की तानें, सबके मन को भाये ।
बंशी की धुन सुनकर राधा, दौड़ी दौड़ी आये ।।

छोटा सा है किशन कन्हैया, नखरे बहुत लगाये ।
उछल कूद करता हैं दिनभर, सबको बहुत सताये ।।

हरकत देख यशोदा मैया, बहुते डाँट लगाये ।
बंशी की धुन सुनकर राधा, दौड़ी दौड़ी आये ।।

चुपके चुपके घर पर आते, माखन मिश्री खाये ।
गोप ग्वाल सब पीछे रहते, लीला बहुत रचाये ।।

लीला धारी कृष्ण मुरारी, कोई समझ न पाये ।
बंशी की धुन सुनकर राधा, दौड़ी दौड़ी आये ।।

कृष्ण जन्म

लेखिका - स्नेहलता "स्नेह"

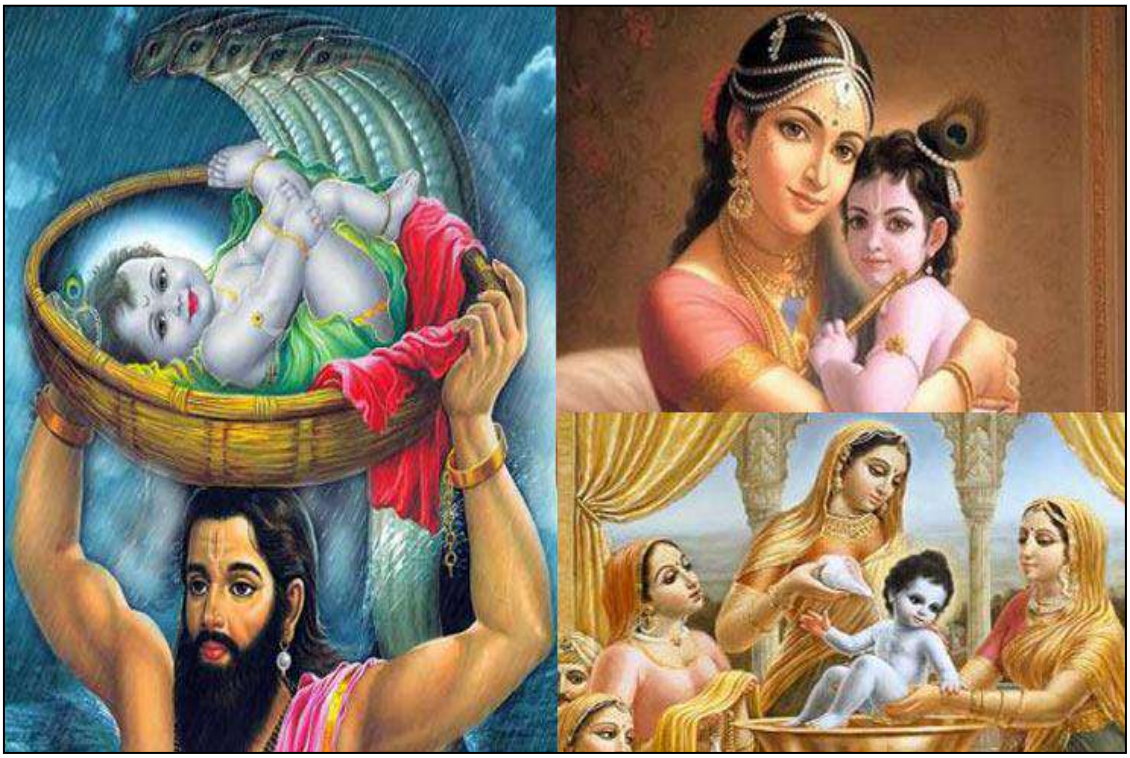

वचन लिया अवकार, देवकी के हैं लाला|

पाले यशुमति नार, सब कहें मुरलीवाला||

माखन मिश्री साथ, खेलते जमुना तीरे|

मोहन नाथे नाथ, नाचते धीरे-धीरे||

सपन सलौने श्याम, राधिका मन को मोहे|

बृज है जिनका, अंग पीताम्बर सोहे||

सुमन खिले हैं पीत, डोलते हैं पीताम्बर|

राधा-मोहन मीत, झूमते अवनि अंबर||

सोते सैनिक रात, ये नशा कैसा छाया|

खुशियों की सौगात, मोहना माया||

चपला चमकी देख, गगन में गरजे बादल|

कैसा विधि का लेख, नींद में प्रहरी पागल||

जन्में हैं जगदीश, देख कर उफनी जमुना|

पग वंदन कर शीश, जगत में आया पहुना||

ऐ किसान !

लेखक - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

ऐ किसान ! ऐ हलधर !
तू वसुंधरा की शान है.

केवल छत्तीसगढ़ ही नहीं,
तू एक पूरा हिन्दुस्तान है.

तन-मन में तेरी सादगी,
तू सत्य-शांति की पहचान है.

ईर्ष्या-द्वेष , छल-कपट से दूर,
कसम से ! तू एक ईमान है.

तेरी कमाई पर सब निर्भर,
तू सब जीव का प्राण है.

पूजा भी तेरी पूजा करै,
तू श्रम-स्वरूप भगवान है.

मानवता झलकती तुझ में,
तू महान से भी महान है.

हालत बुरी है तेरी आज,
तू कष्टों का निशान है.

अपना कष्ट सह लेना,
तू सहिष्णुता का प्रमाण है.

हम पर तेरा साया रहे,
तू तो सारा आसमान है.

आज तिरंगा लहराबे

लेखक - जी. आर. टंडन

राखी लाबे दीदी मोर, सुन्ना हाथ ल पहिराउन।

आशिष भरे हे दाई के ओली,

बड़ी पातर रेशम डोरी,

मया ल तै झन दुरिहाबे

मोर सुन्ना हाथ में राखी पहिराबे।।

एक अंगना में खेलेन कूदने,

दाई के दूध लिए पीये हन।

खेल खेल में होते झगड़ा,

फेर तुमसे मिले हन।

जानेन नहीं छोटे बड़े ला,

रक्षा करबो अपन देश ला।

आज तिरंगा लहराबे।।

राखी लाबे दीदी मोर।।

बड़ मुश्किल में हमला आज, मिले हे आजादी।

गांधी, ने हरु जेल गेईन, भगत ल होगे फांसी।

लिख डारिस अम्बेडकर, संविधान ला,

कहे टंडन झन सहवाग अपमान ला।

श्रद्धा के सुमन चढहाबे।।

आज तिरंगा फहराने, राखी लाबे दीदी मोर, सुन्ना हाथ म राखी पहिराबे।।

गीत प्यार के

लेखिका - काव्यशिखा सिन्हा "रानी"

गीत प्यार के गाओ जी ।
सब को तुम हँसाओ जी ।

खूब खेलो कूदो तुम
और सब को खेलाओ जी ।

रूठ जाय अगर कोई तुम से,
उसे प्रेम से मनाओ जी ।

करें कोई परेशान तुम्हें,
उसे सबक सिखाओ जी ।

माता-पिता का करो सम्मान,
गुरू को शीश झुकाओ जी ।

गुरूजी

लेखक - भानुप्रताप कुंजाम'अंशु'

कभु मारय, कभु डरवावय ।
कभु परेम से समझावय ।
गोटी माटी कचरा ल,
देखय त सकलावय ।
अपन तीर बइठार के,
सफई के महत्ता बतावय ।
रुख राई मं पानी,
कभु बंन उखनावय ।
परकिरिती ले परेम करव,
रोज रोज समझावय ।
भुइयाँ के धुर्रा माटी,
हाथ गोड़ मं सनावय ।
अतका ल देखय त,

हाथ गोड़ ल धोवावय ।
अइसन गुरूजी,
जम्मों जुग मं आवय ।
गुरु 'भुषण' के महिमा,
'अंशु' जिनगी भर गावय ।

चिड़िया

लेखक - मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

फुदक-फुदक कर नाचती चिड़िया,
दाना चुंगकर उड़ जाती चिड़िया |

हरी-भरी सुंदर बगिया में,
मीठे-मीठे गीत सुनाती चिड़िया |

अपने मिश्रीघुले बोलों से
बच्चों का मन चहकाती चिड़िया |

नित मिल-जुल कर आती,
आपस में नहीं झगड़ती चिड़िया |

प्रेमभाव से रहना सिखलाती,
बहुत बड़ी सीख देती नन्हीं चिड़िया |

तरह-तरह के रुप-रंग वाली,
लाल, हरी, काली, नीली, पीली चिड़िया |

फुदक-फुदक कर नाचती चिड़िया,
दाना चुंगकर उड़ जाती चिड़िया ||

चिड़िया की पुकार (ताटंक छंद)

लेखक - महेन्द्र देवांगन "माटी"

देख रही है बैठी चिड़िया, कैसे अब रह पायेंगे ।
काट रहे सब पेड़ों को तो, कैसे भोजन खायेंगे ।।

नहीं रही हरियाली अब तो, केवल ठूँठ सहारा है ।
भूख प्यास में तड़प रहे हम, कोई नहीं हमारा है ।।

काट दिये सब पेड़ों को तो, कैसे नीड़ बनायेंगे ।
उजड़ गया है घर भी अपना, बच्चे कहाँ सुलायेंगे ।।

चीं चीं चीं चीं बच्चे रोते, कैसे उसे मनायेंगे ।
गरमी हो या ठंडी साथी, कैसे उसे बचायेंगे ।।

छेड़ रहे प्रकृति को मानव, बाद बहुत पछतायेंगे ।
तड़प तड़प कर भूखे प्यासे, माटी में मिल जायेंगे ।।

चिरई जाम

लेखक - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

पाका- पाका चिरई जाम
ताजा-ताजा चिरई जाम

गुलबजामुन कस दिखथे
करिया-करिया चिरई जाम

पल-पल ले रसा रहिथे
मीट्ठा-मीट्ठा चिरई जाम

हाट-बजार मं बेचाथे
भागा-भागा चिरई जाम

छाँट-छाँट के खाथन जी
आहा-आहा चिरई जाम

<u>जय कन्हैयालाल की</u>

लेखिका - पुष्पा नायक

देवकी यशोदा का नंदलाल

नंदनंदन कसारी

गोकुल, मथुरा,बृंदावन का

गोपीवल्लभ मुरारी

गोकुल में लगी चौपाल

संग खेले ग्वाल बाल

गोविन्द, माधव, कंसारी

मटकी तोड़े माखन खाये

कदम पर बैठे बांसुरी बजाये

पुण्डरीक पद बलिहारी

कालीदाह में कूद कन्हैया

नाथे नाग गिरधारी

कनिष्ठिका में गोवर्धन साधे

रक्षा करे हितकारी

रूचिर राधिका संग रास रचाये

राधावल्लभ कृष्ण बिहारी

दनुज, निशाचर, अत्याचारी

कंस के संहारी

पार्थसारथी, गीताउपदेशक

स्वामी, वृषभान दुलारी

जय जय हो, जयकार तेरी

दानवेन्द्रो, अनिरुध्दा, केशव, कुंजबिहारी

तीजा पोरा

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

तीजा पोरा के दिन ह आगे, सबो बहिनी सकलावत हे।
भीतरी में खुसर के संगी,ठेठरी खुरमी बनावत हे।।

अब्बड़ दिन म मिले हन कहिके, हास हास के गोठियावत हे।
संगी साथी सबो झन, अपन अपन किस्सा सुनावत हे।।

भाई बहिनी सबो मिलके, घुमे के प्लान बनावत हे।
पिक्चर देखे ला जाबो कहिके, लईका मन चिल्लावत हे।।

नवा नवा लुगरा ला, सबोझन लेवावत हे ।
हाँस हाँस के सबोझन, एक दूसर ल देखावत हे।।

देश के माटी

लेखक - नेमीचंद साहू (गुल्लू)

सुघ्घर हावय मोर

देश के माटी

जेखर महिमा ले

फूल जथे मोर छाती

इही माटी म खेलेन-बाढ़ेन

सबो ले एकर नाता हे|

इही माटी म राम किसन

अउ इही म सीता माता हे

करम धरम के हरय

एहर उज्जर माटी

जेखर महिमा ले

फूल जथे मोर छाती

करिया माटी के गुन सुघ्घर

उपज ल घलो बढाथे

बासी ह गुरतुर मिठाथे

सेहत ल घलो सजाथे

पुरखा के कहानी काहत

जंगल अउ घाटी

जेखर महिमा ले

फूल जथे मोर छाती

माटी के खातिर कतकोन

अपन परान गंवादिन

मान राखिन भुइंया के

दुलरवा बेटा कहादिन

सबो जिनिस ल राखे

का हाथी का चॉटी

जेखर महिमा ले

फूल जथे मोर छाती

इही म रमायन गीता

बेद अउ पुरान हे

देवत ह घलो तरसे

माटी अतेक महान हे

सरग ले हावय सुंदर

बखान करव दिन-राती

जेखर महिमा ले

फूल जथे मोर छाती

संसकीरिति अउ संसकार के

गंगा इहॉ बोहावत हे

दया दान अपनापन के

झंडा घलो फहरावत हे

जग म एखर नाव के

जले दिया अउ बाती

जेखर महिमा ले

फूल जथे मोर छाती

दोस्त

लेखिका - पुष्पा नायक

हर गम को जो काफ़ूर कर दे,

हर पल को खुशियों से भर दे,

वो दोस्त होता है.....

चुपके से आपकी भावनावों को परख ले

जीने की आस जगा दे,

वो दोस्त होता है.....

बिन कहे आपके मन की कहे,

पल भर में जिंदगी जिला दे,

वो दोस्त होता है.....

कांटे चुभे आपके पैरों में तो दर्द हो जिसे,

अपने जब अलविदा कह दे,

तो साथ हो जिसका,

वो दोस्त होता है.....

बोझिल जिंदगी में,

ख़ुशी का फुहार हो जो,

वो दोस्त होता है.....

कई किस्से ,कहानी,कविता,

दोस्ती पर बनी,

हाँ ये मैं भी मानू,

क़ायनात का कोहिनूर है जो,

वो दोस्त होता है.....

जमाने की भीड़ में तनहा खड़े हैं,

आकर हाथ जो थाम ले,

वो दोस्त होता है.....

जागीर बड़ी है,उसकी,

बड़ा धनवान है वो,

जिसे ऐसे दोस्तों का दोस्ताना,

नसीब होता है

प्रकृति को बचायेंगे

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

एक एक पेड़ लगायेंगे, प्रकृति को बचायेंगे।
पेड़ पौधे लगाकर, शुध्द हवा सब पायेंगे ।।
पौधे सभी लगायेंगे, ताजा ताजा फल खायेंगे ।
सेहत अपना बनायेंगे, सादा जीवन अपनायेंगे।।

सोनू मोनू चिंटू पिन्टू, सब मिलकर पेड़ लगायेंगे ।
रोज डालेंगे पानी उसमें, प्रकृति को बचायेंगे।।
चारों तरफ घेरा लगाकर , गाय बकरी से बचायेंगे।
क्यारी बनाकर मिट्टी ड़ाले, नये नये पौधे लगायेंगे।।

बखरी के जिनगानी

लेखक - भानुप्रताप कुंजाम'अंशु'

होवत हे बखरी मं नाचा
मुरई बने ममा, भाटा हे भांचा
मखना बने राजा, करेला रानी
जम्मों झन सुनय, केरा के काहनी
गीत गावय गोभी, बरबट्टी बाजा बजावय
जोक्कड़ बने जरी सब ल हँसावय
पताल बजाए हरमोनिया
चुटकुलिया धरे हे धनिया
नाचय लाल, अमारी, चेंच भाजी
तुमा हे भइया, तोरई बने भौजी
सुहावय सावन भादो के पानी
अइसन हे बखरी के जिनगानी

बारिश ही बारिश

लेखक - श्रवण कुमार साहू "प्रखर"

जिधर देखो उधर यारों,

केवल बारिश ही बारिश है।

ये बारिश की गुजारिश है,

या गुजारिश की ये बारिश है।।

कहीं आफत की बारिश है,

कहीं राहत की बारिश है।

कहीँ खुशी की बारिश है,

कहीं पे गम की बारिश है।।

बात चाहे भी जो कह लो,

बारिश तो आखिर बारिश है।।

कहीं सूखे का आलम है,

कहीं पर दुःख का मातम है ।

कहीं बारिश ही कम है,

कहीं बारिश से गम है।।

समझ आता नहीं यारों,

ये कैसी अब की बारिश है।।

कहीं पानी को है तरसे,

कहीं पानी से है तड़पे।

कहीं बादल से ये बरसे,

कहीं आंखों से ये बरसे।।

कैसे समझाऊँ मैं जग को,

ये बारिश किसकी बारिश है।।

कहीं पे बाढ़ का मन्जर,

कहीं सूखे है समन्दर।

कोई पानी के है अंदर।

कहीं पानी ही है अंदर।।

बात इतनी सी है यारों,

ये तो अजब सी बारिश है।।

मड़ई मेला

लेखक एवं चित्र - बलराम नेताम

गांव म होवत हे, मड़ई मेला

रंग रंग के सजे, हे गा ठेला

किसान भाई मन ला नेवता भेजावत हे

सगा समधियांन मन, मड़ई देखे बर आवत हे

मेला मड़ई देखे बर जावत हे, लइका सियान अव डोकरा

मेला में बिसा के खावत हे,मुर्रा मिठई अव ओखरा

नाती नतरिंन ल बबा ह, मेला घुमावत हे

कोन्हों ला गुपचुप त कोन्हों ला, चना चरपटी खवावत हे

किसम किसम के अव रंग रंग के जिनिस बेचावत हे

लइका मन फुग्गा त दाई बहनी मन, टिकली फुंदरी बिसावत हे

गुदुम गुदुम बाजा ह, बाजत हे

रउत भइया मन झूम झूम के, नाचत हे

रऊत भाई मन, नाचत गावत जात हे

देख के संगी मन ह, बड़ भात हे

मेला मड़ई के नाम लेत्तेच्च, अंतस म उमंग भर जथे

जौन मेला मड़ई देखे बर आथे, तौन तर जथे

कोन्हों चढ़हाते पान सुपारी, कोन्हों चढ़हातें भेला

इही हरे संगी, मोर गांव के मेला

मय रुख आंव

लेखक - संतोष कुमार साहू (प्रकृति)

१

मय रुख आंव, सबो झन के सुख आंव।

जेन दिन हरतार करंव, जीव जनावर के दुख आंव।।

२

मनखे बर मय बैरी जब्बर, काटे मोला ओहा अब्बड।

मोर दुख ला काला बतांव, तभो ले देथों मेहा छांव।।

३

पानी ल मेहा जुरियाथंव, सबो जगा पानी बरसांव।

पानी गिराना जब भुल जांव, मनखे चिल्लाये कांव कांव।।

४

मनखे मारथे ढेला पथरा, मोर पीरा ल काला बतांव।

फर के मय हर फर नई खांव,तभो ले सब बर मया बरसांव।।

५

भुंइया ह रेती म पट जही, चुन चुन ले सबो जर जाही।

बेर आगी ल काला बतांव ठाढे जरगे रुख अऊ रांव।।

६

अभीन घलो बेरा हे, सबो परानी मन रुख लगाव।

भुंइया झन होवय बंजर, अपन जीनगी ल बढिया बनाव।।

७

अपन गलती ल सुधार के, रुख राई ल अपन लयिका बनाव।

जरत बेरा ले घलो, हमर मन ले शांति ल पाव।।

८

सकल पदारथ के संग म , जीव जनावर के संगवारी आंव।

बर पीपर के पूजा करत हव, काबर मेहा नई दुलारी आंव??

मेरा प्यारा छत्तीसगढ़

लेखक - योगेश ध्रुव "भीम"

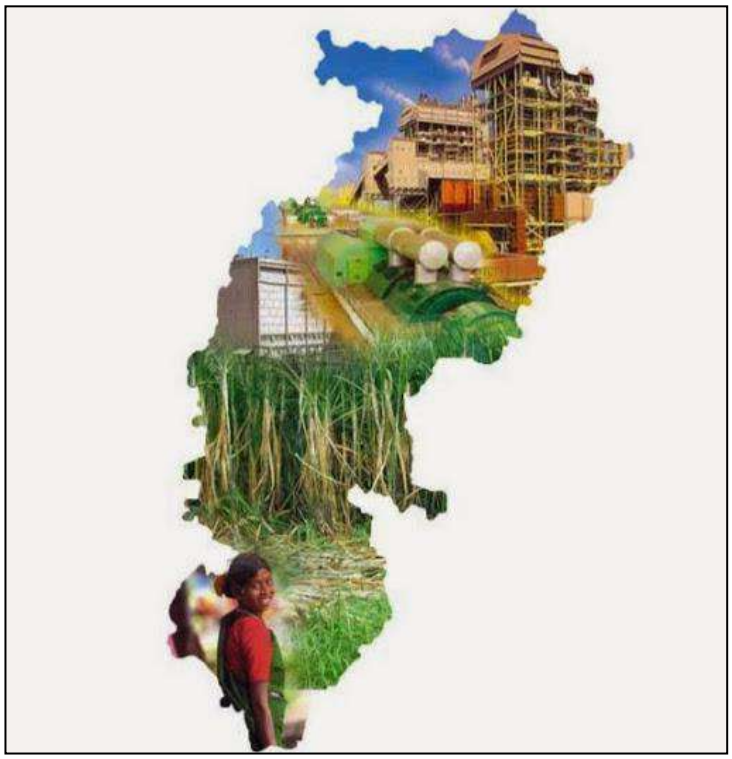

चन्दन धरा छत्तीसगढ़ की,
धान कटोरा सोनहा बाली,
माता तुझको वन्दन है ||

है चारो ओर नदी नाले जो,
और ऊंचे जंगल झाड़ी है,
पहाड़ झरना घाटी सुन्दर ||

वीरनरायण गुण्डाधुर जो,
हनुमान सिंह सपूत महान है,
मातृभूमि की रक्षाहित ओ,
हँस कर अर्पित प्राण दिए ||

छत्तीसगढ़ के गांधी है,
ओ सुन्दर लाल शर्मा जी,
मानव एकता की सन्देश,
ये है वाणी गुरुघासी के ||

ओ रत्नगर्भा धरा प्रदेश के,
तांबा लोहा हीरा कोयला,
खूब ये भी तो भंडार पड़े ||

है महानदी पैरी इंद्रावती,
शिवनाथ अरपा केलो की,
ओ लहर मारती धारा जो ||

जननी बनकर पोषित करती,
जिनके नीर अमृत भी जो,
ओ छत्तीसगढ़ की धरती को ||

मेरा प्यारा यह प्रदेश जो,
माँ भारती के न्यारे न्यारे,
है प्यारा मेरा छत्तीसगढ़ ||

मैया कैसे आऊं तेरे घर

लेखक - इंद्रभान सिंह कंवर

मैया कैसे आऊं तेरे घर,कैसेआऊ तेरे आंगन,

ना तेरे घर दूध दही है, ना मिश्री ना माखन।

ना तेरे घर गायों का डेरा, ना यमुना में शीतल पानी,

जिनके साथ में बीता बचपन, साथ में जिनके आई जवानी।

ना वासुदेव सा त्याग है, ना नंद बाबा सा प्यार है,

ना यशोदा सा लाड है, ना देवकी सा इंतजार है।

दाऊ जैसा भाई नहीं है, ना सुदामा सा यार है,

ना गोपिन की दुलार है, ना राधा सा प्यार है।

वह कदंब का पेड़ नहीं है, ना मधुबन की छाया है,

ना गैयन की गोचर है, ना गोवर्धन सी काया है।

ना बंसी की मधुर तान है, ना मृदंग का ताल है,

द्वापर का वह निश्चल प्रेम, अब मोह माया का जाल है।

द्वापर में थी एक पूतना, था एक कालिया दंश,

कलयुग में है सौ पूतना,लाख बकासुर कंस।

कैसे डांटेगी तू मुझको ,कैसे बोलूंगा प्यारा झूठ,

इस कलयुग के काल में, चारों ओर मची है लूट।

मैया कैसे आऊं तेरे घर,कैसे आऊं तेरे आंगन,

ना तेरे घर दूध दही है, ना मिश्री ना माखन।

मोर

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

घोर घटा जब नभ में छाये, अंधकार छा जाता है ।
बादल गरजे बिजली कड़के, मोर नाचने आता है ।।

जंगल में यह दृश्य देखकर , मन मयूर खिल जाता है ।
खुश हो जाते जीव जंतु सब, भौंरा गाने गाता है ।।

पंखो को फैलाये ऐसे, जैसे चाँद सितारे हों ।
आसमान पर फैले जैसे, टिम टिम करते तारें हों ।।

<u>विराम चिन्ह</u>

लेखक - तरुण कुमार साहू

भाषा को जीवंत बनाता. विराम चिन्ह का ज्ञान

भाव अधिक स्पष्ट रूप में प्रकट करें विव्दान

जब होता है अंत वाक्य का लगता पूर्ण विराम

अगर वाक्य में रूकते थोडा आता अल्प विराम

अधिक देर तक रूकें बीच में लगता अर्ध्द-विराम

भ्रमित नहीं हो जाना सुनकर मिलते-जुलते नाम

प्रश्नवाचक चिन्ह लगे जब प्रश्न पूछता वाक्य

विस्मयादिबोधक हो जब अचरज आदि भाव

साथ-साथ के शब्द जोडता शब्द योजक चिन्ह

कथन-पूर्व वक्ता के आगे लगता निर्देश चिन्ह

शब्द-विशेष दिखाता चिन्ह इकहरा अवतरण

ज्यों की त्यों हो बात बतानी चिन्ह उघ्दरण

अगर करें अभ्यास ध्यान से असरदार हो भाषा

सदा शुघ्द हो लेखन-वाचन विव्दानों से आशा

शरीर के अंग एवं उनके कार्य

लेखिका - चानी ऐरी

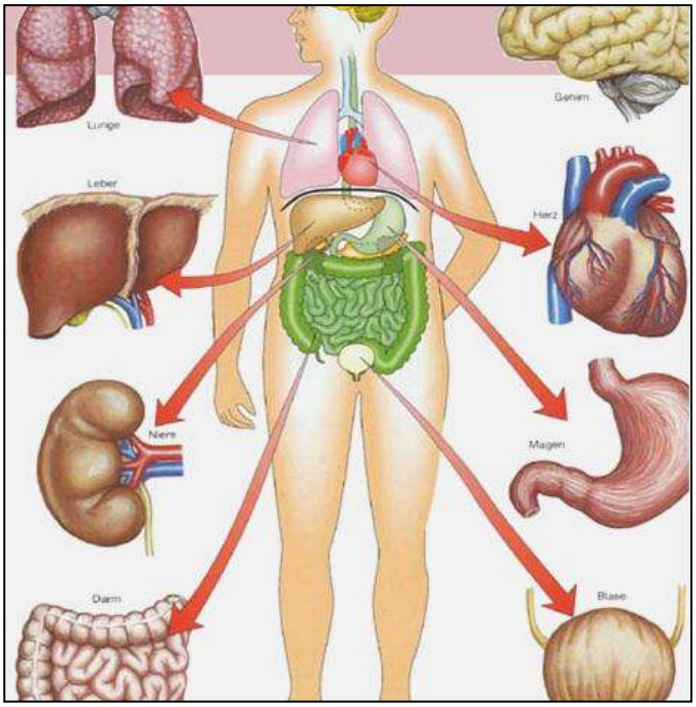

आँखें देखें, कान सुनते, जीभ लेती स्वाद

नाक सूंघे गंध को, त्वचा करें स्पर्श का एहसास

हड्डी करती शरीर का ढांचा तैयार

अंगों की रक्षा करती

मांसपेशियों के व्दारा हर अंग अंग हिलता डुलता

फेफड़े करते श्वसन और सोखे ऑक्सीजन

दांत चबाते भोजन, पचता जो, अमाशय में

लार ग्रंथियां मुंह में होतीं जो छोड़ती पाचक लार

यकृत और अग्नाशय पाचक रस उत्पादक हैं

हृदय खून को पंप करता, गुर्दे छाने रक्त

छोटी आँत की दीवारें सोखे भोजन सार

बड़ी आँत अवशोषित करती, उसमें से जल भाग

पसीना निकाले शरीर से दूषित पदार्थ, रखे नियंत्रित ताप

तंत्रिकाएं संदेशवाहक, दिमाग करे विचार

यह हैं शरीर के अंग और उनके कार्य

साथ बहन का भाई

लेखक - द्रोणकुमार सार्वा

रेशम की धागों की डोरी
राखी बनकर सजी कलाई
बहना भी इतराकर कैसे
भैया पर अधिकार जताई
रोली कुमकुम तिलक माथ
पकवानों के साथ मिठाई
भारी मन भी आज प्रफुल्लित
पाकर साथ बहन का भाई

मांगे क्या उपहार बहन भी
भाई की खुशियां ही काफी
जीते जी मैं सदा बांध लू

तेरे इन हाथों में राखी
और भला वर रक्षा का दे
उमर रह गया अब जो बाकी
रुपये पैसे सोने चांदी से
किसने प्रेम की बोली लगाई
भारी मन.....

राखी की कीमत कितनी है
पूछो जिनकी सूनी कहानी
नन्ही गुड़िया मां से बोली
दिलवा दो मां मुझे भी भाई
तुतलाते नन्हे स्वर में
राखी की रट मुन्ने ने लगाई
सच कहते है दुनिया वाले
बहन भाई की है परछाई
भारी मन.....

स्कूल मुझे पास बुलाता है

लेखिका - धारिणी सोरी

कितना प्यारा बचपन होता, निश्छल मुस्कान सदा रहती।
काम-काज का ध्यान नही, पर माँ की याद सदा आती।
कब माँ के हाथों से रोटी, मिलते खीर पुड़ी और सब्जी ।
बड़े चाव से हम मिलकर खाते, कहते माँ तू कितनी अच्छी।
हुआ समय अब जाता हूं शाला, बाबा, समीर बुलाते हैं।
दोस्त बने हैं प्यारे-प्यारे, मिलकर धूम मचाते हैं।
कितने अच्छे टीचर यहाँ हमे, खेल-खेल में पढ़ाते हैं।
खुद करते और सीखते जाते, उलझन पर पास बुलाते हैं।
ज्ञान और विज्ञान की बातें, बड़े ध्यान से सुनते हम।
अगर समझ न आए कुछ तो, फिर बतलाने कहते हम।
अब समझ आया पापा क्यों, पढ़ो-पढ़ो रटा करते हैं।

पढ़ने से शिक्षा मिलती हमको, यही बतलाते रहते हैं।
मुझे अपना लक्ष्य बना के पढ़ना, आगे ही बढ़ते जाना है।
मंजिल मेरी जरूर मिलेगी, संकल्प अटूट बनाना है।
स्कूल मेरा सबसे प्यारा, मुझे अपने पास बुलाता है।

हमन परबुधिया नोएन गा

लेखक - योगेश ध्रुव (भीम)

जांगर पेरत पसीना चुचवावत,
भुइय्या के छाती म अन उगावत,
चटनी बासी के खवैय्या आवन न,
येहर धान के कटोरा हावे गा,
हमन परबुधिया नोएन रे,
सुघ्घर छत्तीसगढ़िया आवन गा ||

मोर छाती म बिजली पानी,
रुख राई अउ जंगल झाड़ी,
कोयला के खदान हावे गा,
हमन परबुधिया नोएन रे,
सुघ्घर छत्तीसगढ़िया आवन गा ||

चारो मुड़ा हे नदिया नरवा,
हीरा लोहा टिन के भंडार हावे,
इहाँ के लोहा जपान जाथे न,
बैलाडीला भिलाई महान हावे,
हमन परबुधिया नोएन रे,
सुघ्घर छत्तीसगढ़िया आवन गा ||

इहाँ के जंगल म तेंदू पत्ता,
साल सागौन के रवार हावे न,
हर्रा बेहड़ा चार महुवा तेंदू,
लाख कत्था अउ जड़ी बूटी,
हमन परबुधिया नोएन रे,
सुघ्घर छत्तीसगढ़िया आवन गा ||

इहाँ के भुइय्या म महानदी,
अरपा पैरी अउ इंद्रावती न,
तीरथगढ़ चित्रकूट झरना हावे,
खारुन शिवनाथ केलो रेंड नदियां,
मैनपाट घलो स्थान हावे न,
हमन परबुधिया नोएन रे,
सुघ्घर छत्तीसगढ़िया आवन गा ||

सबले ऊँचा गौरालाटा हावे न,
महामाया अउ बम्बलाई माता,
सम्बलाई माई दन्तेश्वरी दाई,
गंगरेल अउ हसदो बाँध हावे न,
हमन परबुधिया नोएन रे,
सुघ्घर छत्तीसगढ़िया आवन गा ||

हैहयबंसी राज करिस इहाँ,
पाण्डबंसी अउ सोमबंसी राजा,
सिरपुर अउ रतनपुर के घलो,
इतिहास ह भारी हावे न,
हमन परबुधिया नोएन रे,
सुघ्घर छत्तीसगढ़िया आवन गा ||

लक्ष्मण मंदिर भोरम देवा,
कैलाश गुफा अउ मंदकुद्वीपे,
इहाँ ये सबो स्थान हावे न,
हमन परबुधिया नोएन रे,
सुघ्घर छत्तीसगढ़िया आवन गा ||

वीरनरायन जइसे सपूत महान,
स्वामी आत्मानंदा गुरु घासीदास,
सुंदर लाल शर्मा इहाँ गाँधी घलो न,
एखरे सेती भीम बोलत हावे न,
हमन परबुधिया नोएन रे,
सुघ्घर छत्तीसगढ़िया आवन गा ||

हलषष्ठी

लेखक - श्रवण कुमार साहू (प्रखर)

छः किसिम के भाजी टोर के,

छः किसिम के कथा ल सुने हे।

हलषष्ठी के कहानी सुन के,

मने-मन म गुने हे।।

लाई,चना, मौहा अउ,

श्रीफल ल चढ़ाए हे।

पसहेर चाउर के सुग्घर,

भोग ल लगाए हे।।

बेटी बेटा के मंगल कामना ले,

देवता मन ल मनाए हे।

भैस के दूध दही ल,

देवता मन ल चढ़ाए हे।।

पिंवरा छुही के पोती ल,

लईका उपर लगाए हे।

धन हे महतारी तोर ममता ह,

अपन लईका बर कतेक बाढे हे ।

अपन लईका ल बचाय के खातिर,

सौंहत कवच बन के ठाढ़े हे।।

<u>व्याकरण पहेलियां</u>

प्रस्तुतकर्ता - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

1. एक समास ऐसा है,
   जिसके दोनों पद प्रधान
   लालू-जोशू , रानी-मनु, बताओ बेटे राम-रहमान?
2. एक कहानी जिसमें,
   पोते ने खरीदा चिमटा
   दादी को दिया भेंट और,
   बड़े प्यार से गले लिपटा, कालीरात, कारागार, कालिंदी
   कथा कृष्णावतार
   चलो बताओ इसमें, कौन सा है अलंकार?
3. दीर्घ स्वर संधि है,
   दीपों का त्यौहार
   कब होती है जी, फुलझड़ी की बौछार है?
4. 'प्राचीन' शब्द का विलोम,
   तू बता 'नवीन' भाई
   शिखा को एक और पता है? उसने भी बुध्दि लगाई

उत्तर :- 1. व्दंव्द समास 2. ईदगाह 3. अनुप्रास अलंकार 4. दीपावली 5. अर्वाचीन

<u>विज्ञान के खेल - वर्षा मापक यंत्र</u>

प्रस्तुतकर्ता एवं चित्र - विरेन्द्र कुमार चौधरी

<u>सहायक सामग्री</u> - कीटनाशक का खाली डिब्बा, लकड़ी का स्केल.

<u>बनाने की विधि</u> - खाली कीटनाशक डिब्बे के ऊपर के भाग को काट कर उसकी धारिता क्षमता को ऊपर से नीचे तक बराबर कर लेते हैं. और बन गया वर्षा मापक यंत्र. इसके साथ एक लकड़ी का स्केल बनाते हैं जिसमे सेंटीमीटर में माप चिन्ह अंकित करते है.

<u>कार्यविधि</u> - इस प्रकार कबाड़ से जुगाड़ करके बनाये गए वर्षा मापक यंत्र को खुली जगह में सुरक्षित करके रख देते हैं जिससे होने वाली वर्षा का जल उस यंत्र में एकत्रित हो जाता है. इस जल को निकालकर हम लकड़ी के स्केल को उस यंत्र रुपी डिब्बे के अंदर डालते हैं तो लकड़ी का स्केल जितनी बरसात हुई हुई उतना भीग जाता है और उसे हम अपनी पंजी में दिनाँक अनुसार दर्ज करते हैं.

<u>प्रमाणिकता</u> - हमने अपने विद्यालय शासकीय प्राथमिक शाला तिलाईदादर जून 2018 में तीन वर्षा मापक यंत्र बनाये और तीनों यंत्रों को खुली जगह में अलग अलग स्थान पर रखा. तीनों यंत्रों से वर्षा को मापकर परीक्षण किया. तीनों यंत्रों से बराबर पानी की मात्रा हमारे स्केल में दर्ज हुई.

<u>उपयोग</u> - इस प्रकार के वर्षा मापकर हम दैनिक होनी वाली वर्षा की वास्तविक जानकारी प्राप्त कर लेंगे.

<u>लाभ</u> -

1. वास्तविक वर्षा का पता लगाना
2. पूरे सत्र के वर्षा का पता लगाना
3. बच्चो में वैज्ञानिक सोच पैदा करना

<u>विशेष</u> - इस प्रकार के वर्षा मापक यंत्र आसानी से बिना खर्च के बना सकते हैं.

<u>अनुभव</u> - हमारे विद्यालय का पूरा स्टाफ और गांव के किसानों इस यंत्र से जुड़ गए हैं और हम से मिलने पर वर्षा की मात्रा को पूछते हैं.

<u>विज्ञान के खेल – स्थिर विद्युत</u>

लेखिका एवं चित्र कांति नागे

अपने विद्यालय में प्रायोगिक गतिविधि के अंतर्गत पीवीसी के पाइप को कपड़े से रगड़ कर कर केन के डिब्बा को पीवीसी के पाइप के पास लाते हैं. केन का डिब्बा पीवीसी के पाइप की ओर आकर्षित होकर चलने लगता है. इसे देख कर छात्र बहुत खुश हुए. इस गतिविधि को देखकर छात्रों के मन में बहुत से प्रश्न उत्पन्न हुए, जिसकी जिज्ञासा शांत करने के लिये मैंने स्थिर विद्युत पाठ को समझा कर दिया. इस तरह छात्र स्वयं प्रयोग को दोहराने लगे. आवेशों में आकर्षण तथा प्रतिकर्षण तथा इलेक्ट्रॉनों को समझे. वह भी खेल खेल में.

कुछ छात्रों ने गुब्बारे को रगड़ कर दीवार में आकर्षित कर दिखाया. गुब्बारे के पास पीवीसी के पाइप को रगड़ कर लाने लाने पर प्रतिकर्षण का प्रभाव दिखा. इस गतिविधि को कक्षा 6 व 7 में कराया. किंतु इसका प्रभाव संलग्न प्राथमिक शाला के छात्रों में भी दिख में भी दिख रहा था. कक्षा पहली दूसरी के बच्चे गुब्बारों को रगड़ कर दीवार पर आकर्षित कर रहे थे.

<u>नवाचार - पॉक्सो बॉक्स</u>

लेखिका तथा चित्र - विभा सोनी

मैं अपनी शाला में करीब 3 साल पहले से पहले इस नवाचार पर काम कर रही हूं. पॉक्सो बॉक्स का निर्माण मैनें अपनी शाला में बच्चों मे किसी भी प्रकार के अपराध, लैंगिक व मानसिक उत्पीड़न न होने के लिये कर रही हूं. इसका पूरा नाम प्रोटेक्शन आफ चिल्ड्रन फ्राम सेक्सुअल आफेंस है. बच्चों के साथ आये दिन

अपराधों की खबरें समाज को शर्मसार करती नजर आती हैं. इस तरह के मामलों की बढ़ती संख्या को देखकर सरकार ने वर्ष 2012 में एक कानून बनाया जिसका नाम पॉक्सो एक्ट रखा गया. जो बालक और बालिकायें 18 वर्ष से कम उम्र के हों इस नियम के दायरे में आते हैं.

<u>क्रियान्वयन</u> - मैनें अपनी शाला में प्रार्थना सभा के समय पॉक्सो एक्ट की जानकारी देकर उन्हे सजग किया और साथ ही यह समझाया कि उन्हें कोई भी बात अपने पालक और शिक्षकों से छुपानी नहीं चाहिए. किसी भी प्रकार की समस्या होने पर अपनी शिकायत एक कागज पर लिखकर इस बॉक्स में डालना है. कुछ समय पश्चात् प्रधान अध्यापक की उपस्थिति में उसे खोल कर निराकरण किया जाता है साथ ही साथ उनके माता-पिता से भी बात की जाती है. शाला का कोई छात्र अगर गलत हरकत करता है तो उसे समझाकर चेतावनी दी जाती है. मामला गंभीर होने पर उच्च अधिकारियों से व गांव के समिति के सदस्यों से बातचीत की जाती है.

<u>लाभ</u> - इस नवाचार के माध्यम से बालिकाओं में आत्मविश्वास में वृध्दि हुई है उ.नकी मानसिकता पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है. छेड़खानी और बच्चों में यौन उत्पीड़न जैसे मामलों की पहचान और समाधान का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है. बालिकाओं में कक्षा उपस्थिति में सुधार के परिणाम सामने आये हैं जो प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिल रहा है.

<u>नवाचार – कहानी का नाट्य रूपांतरण</u>

प्रस्तुतकर्ता एवं चित्र - नेहा पैगवार

उद्देश्य - कहानी का नाट्य रूपांतरण द्वारा हिन्दी भाषा व साक्षरता की समझ बच्चों में विकसित करना.

साम्रगी- चार्ट पेपर, कलर पेसिंल, धागा, पेसिंल.

गतिविधि- बच्चों के साथ मिल कर चार्ट पेपर पर पात्र-सफेद बिल्ली, काली बिल्ली एवं बंदर के चित्र पेसिंल से बना कर कलर कर कैची से out line काटकर मुखौटे का निर्माण किया गया एवं धागे से बांध दिया गया.

लाभ- बच्चों के कहानी के नाट्य रूपांतरण द्वारा प्रस्तुति के साथ अभिनय क्षमता का विकास. साथ ही साक्षरता के महत्व को समझ सकेंगें.

<u>नवाचार – ग्रीन डे</u>

प्रस्तुतकर्ता एवं चित्र - कन्हैया साहू 'कान्हा'

बच्चों को पर्यावरण के महत्व को समझाने व पर्यावरण से जोड़ने के लिए हमारी शाला में ग्रीन डे का आयोजन किया गया जिसमें सभी बच्चे व शिक्षक हरे रंग के कपड़े पहनकर शाला में उपस्थित रहे. बच्चो द्वारा पेड़ पौधों के महत्व व आवश्यकता पर निबंध लेखन, भाषण आदि प्रस्तुत किया गया. बच्चो के लिए चित्रकला, राखी बनाने, बॉल बॉक्स में डालने, गुब्बारा फुलाने, गुब्बारा फोड़ने जैसे अन्य खेलों का आयोजन किया गया. बच्चों के लिए सावन का झूला भी लगाया गया. सभी ने पर्यावरण, पेड़, हवा, पानी की सुरक्षा एवं संरक्षण का संकल्प लिया.

<u>नवाचार - चित्रकारी की क्षमता का विकास</u>

प्रस्तुतकर्ता एवं चित्र – प्रतिभा त्रिपाठी

<u>आवश्यक सामग्री</u> - कापी का कवर पेज, पेंसिल,कलर...

<u>गतिविधि</u> - शून्य निवेश नवाचार में अपनी कांपी के कवर पेज को आकर्षित बनाना.

<u>लाभ</u> - बच्चो की चित्रकारी का विकास.

<u>मेरा अनुभव</u> - बच्चे सुंदर और साफ चित्र बना लेते हैं.

<u>नवाचार - मासिक वाल मैगजीन बाल दर्पण का प्रकाशन</u>

नवाचारी शिक्षक एवं चित्र - प्रेमचंद साव

<u>उद्देश्य</u>: -मासिक वाल मैगजीन बाल दर्पण का नियमित प्रकाशन कर छात्र-छात्राओं में स्वयं सीखने की प्रवृत्ति, लेखन क्षमता, बौध्दिक क्षमता, मौलिक सोच को बढ़ावा देना.

<u>आवश्यक सामग्री</u>: -कलर पेपर, स्केच पेन, पेंसिल, प्रकाशन हेतु स्कूल की दीवार आदि.

<u>क्रियान्वयन</u>: - वाल मैगजीन के प्रभारी शिक्षक प्रेमचंद साव अपनी टीम की सहायता से सभी छात्र छात्राओं से प्राप्त निबंध, चित्र, स्वरचित कविता, स्वरचित लेख, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, सामान्य ज्ञान, प्रेरक प्रसंग, पहेलियां, महापुरूषों के बारे

में, राष्ट्रीय पर्व, राष्ट्रीय दिवस, अंतर्राष्ट्रीय दिवस आदि के बारे में संकलन कर बाल कैबिनेट में दिखाते हैं. उसके बाद प्रतिमाह की एक तारीख को वाल बाल दर्पण वाल मैगजीन प्रकाशित कर दी जाती है.

<u>लाभ</u>: -

1. इससे छात्र-छात्राओं में स्वयं सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है.
2. लेखन क्षमता, बौध्दिक क्षमता, मौलिक सोच को बढ़ावा. अपने आसपास के घटनाक्रम को जानने व समझने में सहायता मिल रही है.
3. राज्य, देश, विदेश में घटित घटनाओं को लिखने और समझने में सहायता मिल रही है.
4. वॉल मैगजीन से छात्र-छात्राएं सामान्य ज्ञान के साथ-साथ, कहानी, कविता, चित्र, अनमोल वचन, पहेली, विज्ञान पहेली, चुटकुले, निबंध, प्रेरक प्रसंग, पर्यावरण संरक्षण, ग्लोबल वार्मिंग, विज्ञान एवं स्वच्छता से संबंधित, चित्र एवं अन्य मनोरंजक जानकारियों को नए तरीके से पेश कर पा रहे हैं और जान पा रहे है.
5. इससे बच्चों का व्यक्तित्व, जिज्ञासा और भावनाएं सामने आने लगी हैं. इस तरह से बच्चों में माह भर किए गए संज्ञानात्मक एवं सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों में निपुण बना रहा है.
6. इससे छात्र-छात्राएं के स्वरचित लेख भी समाहित हो रहे हैं, जिससे उनमें लेखन में रुचि उत्पन्न हो रही है.

<u>मेरा अनुभव</u>: - नियमित मासिक वॉल मैगजीन बाल दर्पण प्रकाशन से बच्चों में भाषायी कौशल, लेखन क्षमता, बौध्दिक क्षमता, सोच विचार से तर्क बुध्दि प्रखर हो रही है और बच्चों के प्रतिभा निखारने में सफलता प्राप्त हो रही है.

बाढ़ से बचाव की पेंटिंग

चित्रकार - चानी एरी

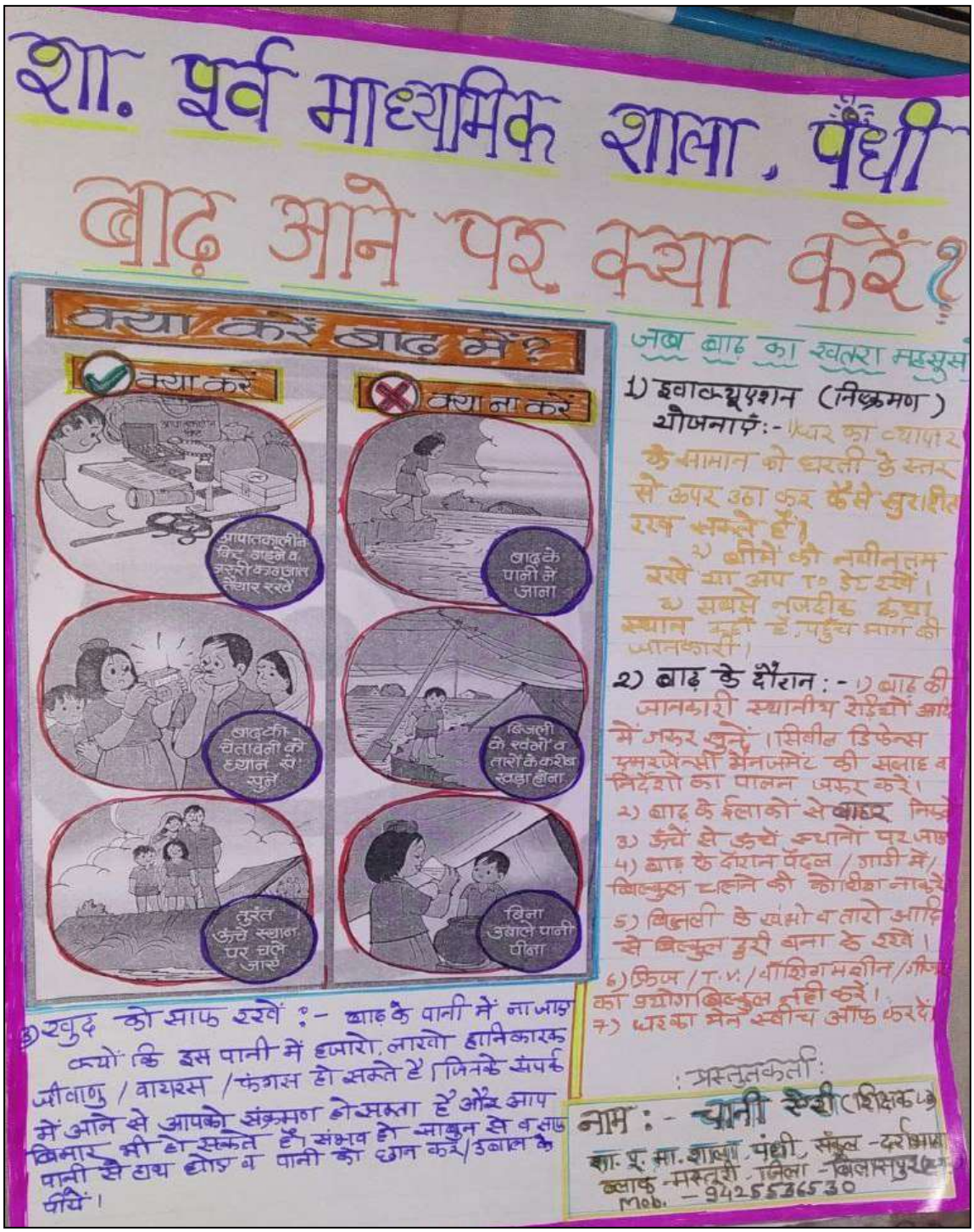

आओ हंस लें

पत्नी: सुनो जी, आपके बर्थडे के लिए इतने अच्छे कपड़े लिए हैं कि पूछो ही मत.

पति (खुश होकर): अरे वाह, लाओ दिखाओ.

पत्नी: हां, अभी पहनकर आती हूं.

टीचर: भारत के एक महान वैज्ञानिक का नाम बताओ?

स्टूडेंट: सर, आलिया भट्ट.

टीचर (छड़ी लेकर): यही सीखे हो?

दूसरा स्टूडेंट: यह तोतला है सर, आर्यभट्ट बोल रहा है.

मेहमान: और बेटा, अब आगे क्या करोगे?

लड़का: कुछ नहीं, बस आपके जाते ही बिस्किट खाऊंगा क्योंकि नमकीन तो आपने छोड़ी नहीं है.

पप्पू: शादीवाले घर में दो चीज बार-बार बनती रहती हैं.

राजू: क्या?

पप्पू: रिश्तेदारों का मुंह और दूसरा चाय.

भाखा जनउला

प्रस्तुतकर्ता - दीपक कंवर

		1 धु		2			3 बा		4
5 ज						6 को			
				7 लु				8 रा	
			9 सु						
10 न					11 ता			12	
			13 म	14				15 ला	
16 ल		17				18			
					19 क				20
21	हा		22		23				
		24 म					25 ल		

बाएँ से दाएँ - 2. रुई, 3. बादल, 5. हमउम्र, 6. 20 की संख्या, 7. साड़ी, 8. रुको, 9. तोता, 10. गला, 11. ताला चाबी, 13. बीच, 15. तोंद, 16. नजदीक, 19. महिलाओं का त्योहार. 21. चाय, 24. दोपहर, 25. झूठा

ऊपर से नीचे - 1. दूर, 3. बाड़ी, 4. रात, 5. जबरदस्ती, 6. गोद, 7. काटना, 11. गरम, 12. चाँवल की पतली रोटी, 14. सब्जी का रस, 16. लालची, 17. खड़ा, 18. धूप, 19. कमर, 20. ठग, 22. शाम

उत्तर

		1 धु		2 पो	नी		3 बा	द	4 र
5 ज	हूँ	री	या			6 को	री		थि
ब		हा		7 लु	ग	रा		8 रा	हा
र			9 सु	आ					
10 न	रे	टी			11 ता	रा	कुं	12 ची	
			13 म	14 झो	त			15 ला	दा
16 ल	क	17 ठा		र		18 घा			
ल		ढे			19 क	म	र	छ	20 ठ
21 चा	हा		22 सां		23 नि				ग
हा		24 म	झ	नि	हा		25 ल	ब	रा